अप्रैल 2023

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

सामाजिक न्याय का नया अध्याय

08

नेताजी को पद्मविभूषण 06

निकाय चुनावः भाजपा से हिसाब लेंगे शहरी वोटर 26

R.N.I. No. 68832/97

www.samajwadiparty.in

> सांप्रदायिक शक्तियां माहौल बिगाड़ कर चुनावी लाभ लेने की कोशिश में लगी रहती हैं। समाजवादियों का यह दायित्व है कि वे जनता के सहयोग से इन शक्तियों के मंसूबों को नाकाम करें। समाजवादी पार्टी ने हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने की पूरी कोशिश की है और आगे भी करती रहेगी। गांधी जी का दिखाया अहिंसा का रास्ता ही देश के लिए सही रास्ता है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

अप्रैल 2023

वर्ष 24| संख्या 06

प्रिय पाठकों

आप सभी के प्यार, उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन से आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन, बदली हुई साज-सज्जा के साथ अपने तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। हम आपके आभारी हैं कि अभी तक के सफर में हम आपकी कसौटी पर खरे उतर सके हैं। हम भरोसा दिलाते हैं कि भविष्य में भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। कृपया अपना प्यार यूं ही बनाए रखें।

धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

'पद्म विभूषण' नेताजी 06

08 कवर स्टोरी

सामाजिक न्याय का नया अध्याय

क्षेत्रीय दल ही क्षत्रप 28

लोकसभा के अगले चुनाव में क्षेत्रीय दलों की बहुत बड़ी भूमिका होने जा रही है। इसके स्पष्ट संकेत दिख रहे हैं कि भाजपा को सत्ता से बेदखल क्षेत्रीय दल ही कर सकते हैं। कई राज्यों में क्षेत्रीय दल ही भाजपा से मुकाबला कर रहे हैं एवं उसे शिकस्त देने का माद्दा रखते हैं।

सारस, आरिफ और अखिलेश जी का पर्यावरण प्रेम 40

मधु लिमये जी का जन्मशताब्दी समारोह 42

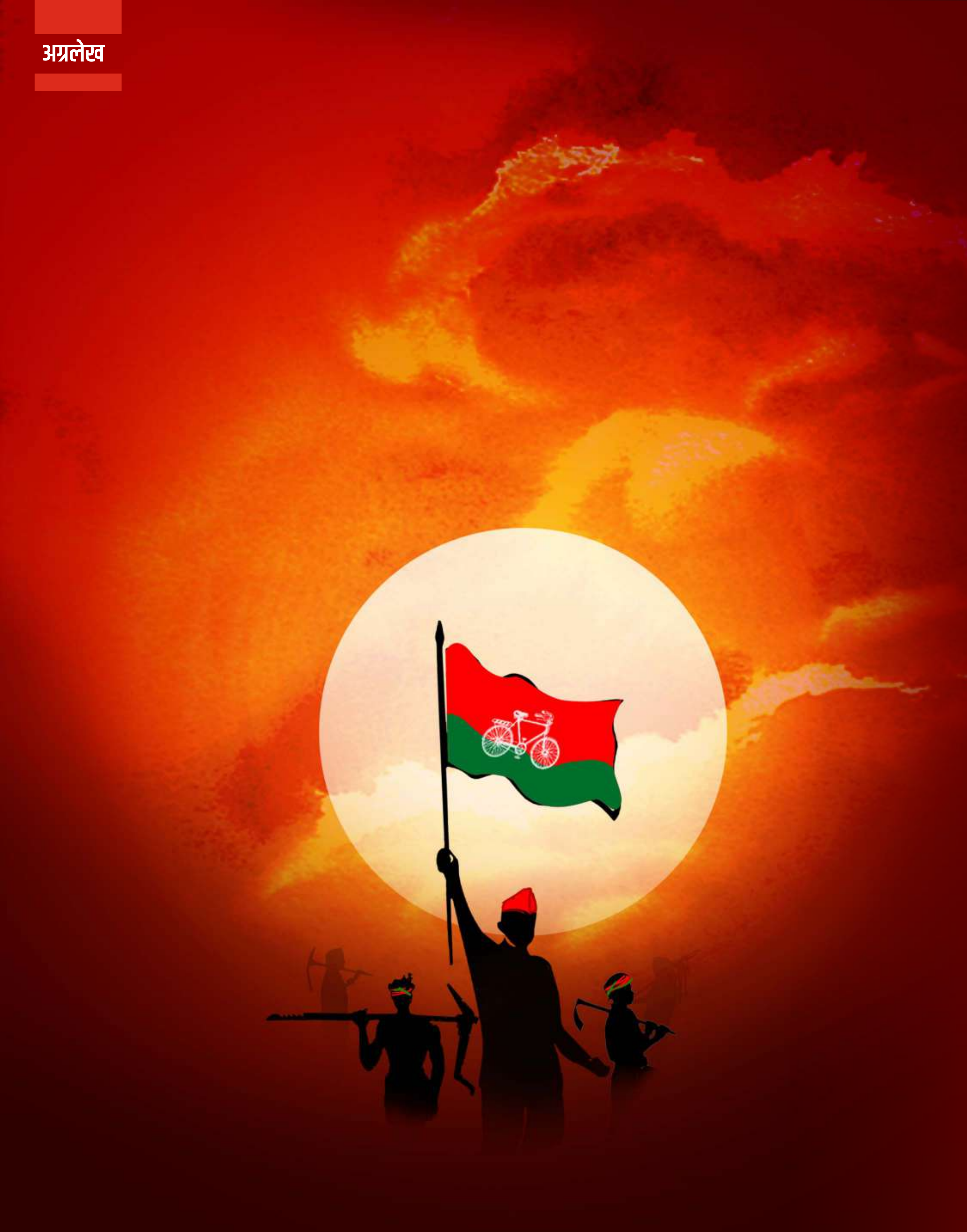

जय समाजवाद

उदय प्रताप सिंह

23 मार्च का दिन, दो महान समाजवादियों के नाम से जुड़ा हुआ है। डॉक्टर लोहिया का जन्मदिन है और वही सरदार भगत सिंह की शहादत का दिन भी है। यह दोनों समाजवादी थे जो यह मानते थे कि आजादी आजादी के लिए नहीं आजादी व्यवस्था परिवर्तन के लिए जरूरी होगी। व्यवस्था परिवर्तन के सपने से उनका अभिप्राय था कि इस समाज में जो विद्रूपता है , जो विसंगतियां हैं, जो असमानता है उसको दूर करके एक समाजवादी प्रगतिशील धर्मनिरपेक्ष समाज की संरचना कैसे की जाए जिसमें सत्ता,सम्पन्नता और सम्मान का यथा संभव लाभ सबको मिले।

यही सपना हमारे संविधान निर्माताओं ने बाद में देखा था। उस सपने को पूरा करने के लिए यह लोग पहले से काम कर रहे थे। संविधान 1950 में बना है लेकिन भगत सिंह बहुत पहले अपनी शहादत इन ही आदर्शो के लिए दे चुके थे और वह चाहते थे कि हमारा देश का समाज सामाजिक बराबरी के आधार पर प्रगति करे। और यही विचार डॉक्टर लोहिया के थे जो उन्होंने गांधीजी से सीखे थे। गांधीजी और भगत सिंह के बारे में आम धारणा है कि वह एक दूसरे को पसंद नहीं करते थे, यह बिल्कुल गलत बात है, वे एक दूसरे का सम्मान करते थे दोनों आज़ादी के लिए जान हथेली पर रखकर जीते थे।

पर गांधी एक संत भी थे और अहिंसा के पुजारी थे वह साधन की पवित्रता पर इतना ज़ोर देते थे कि उसके लिए वे सब कुछ छोड़ने को तैयार थे। भगत सिंह आजादी को हर हाल में हासिल करने के पक्ष में थे। इस मतभेद के बावजूद दोनों समाजवादी थे और पूंजीवादी और और साम्राज्यवादी व्यवस्था से जूझ रहे थे। आज हम उन दोनों महापुरुषों, भगत सिंह व डॉ लोहिया को श्रद्धांजलि देते हैं। उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लेकर ही इस देश का उद्धार किया जा सकता है ऐसा मेरा साम्यवादी सोच विचार है।

आज यह देश फिर पूंजीवादी व्यवस्था, निजीकरण की ओर बढ़ रहा है देश में सांप्रदायिकता फैलाने का षड्यंत्र रचा जा रहा है इसलिए डॉक्टर लोहिया और भगत सिंह के रास्ते पर चलना और अधिक प्रासंगिक तथा आवश्यक हो गया है। दोनों की वैचारिकता को नमन, श्रद्धांजलि।

जय हिंद।

'पद्म विभूषण' नेताजी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के संस्थापक स्वर्गीय श्री मुलायम सिंह यादव-नेताजी को देश-प्रदेश व समाज के लिए की गई उनकी अनुकरणीय सेवाओं के लिए सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में एक 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया है।

5 अप्रैल को राष्ट्रपति भवन में हुए समारोह में नेताजी को मिला 'पद्म विभूषण' सम्मान उनके पुत्र व समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से ग्रहण किया।

'पद्म विभूषण' ग्रहण करने के बाद श्री अखिलेश यादव ने नेताजी को याद करते हुए कहा कि महान व्यक्तियों का सम्मान वस्तुतः उनके महान विचारों एवं कार्यों का सम्मान होता है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि माननीय नेताजी को 'पद्म विभूषण' से सम्मानित होने पर हार्दिक नमन।

सामाजिक न्याय का नया अध्याय

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में 2022 के विधानसभा चुनाव में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के नाम पर बने अंबेडकरनगर जनपद की सभी विधानसभा सीटों पर समाजवादी पार्टी ने जीत हासिल की थी। दलितों और वंचितों के परम पूज्य बाबा साहब के नाम वाले जनपद में समाजवादी पार्टी का क्लीन स्वीप कोई छोटी राजनीतिक घटना नहीं थी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विधानसभा चुनाव से पहले अंबेडकरवादियों और लोहियावादियों को एक मंच पर लाकर सामाजिक न्याय की उनकी साझा विरासत को मजबूत करने की जो पहल समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने की थी अंबेडकरनगर जनपद के चुनावी नतीजे उसका ही परिणाम थे।

उल्लेखनीय है कि बसपा के संस्थापक और दलितों में चेतना पैदा करने वाले नायक कांशीराम से मिशनरी राजनीति का ककहरा सीखने वाले ज्यादातर राजनेता विधानसभा चुनाव से पहले सपा में शामिल हो गए। दो विचारधाराओं के करीब आने से सामाजिक न्याय हासिल करने की लड़ाई को मिली मजबूती का नया अध्याय अब लिखा जाने लगा है और इसकी पहल कदमी फिर एक बार सपा के मुखिया श्री अखिलेश यादव ने थाम रखी है। बाबा साहब की जयंती 14 अप्रैल के अवसर पर उनके जन्म स्थान मध्य प्रदेश के महू पहुंचकर श्री अखिलेश यादव ने जब श्रद्धा सुमन अर्पित किए तो उनके साथ सामाजिक न्याय की राजनीति के एक अहम स्तंभ चौधरी चरण सिंह के पोते और राष्ट्रीय लोक दल के मुखिया जयंत चौधरी के अलावा दलित राजनीति के युवा चेहरे

चंद्रशेखर भी मौजूद थे।

बाबा साहब के जन्म स्थान पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि देने की श्री अखिलेश यादव की पहल कदमी की दलितों एवं पिछड़ों के बीच सकारात्मक चर्चा हो रही है। सामाजिक न्याय के इस नए अध्याय को विस्तार देते हुए श्री अखिलेश यादव ने रायबरेली जनपद में आयोजित एक कार्यक्रम में मान्यवर कांशीराम जी की प्रतिमा का अनावरण भी किया। ऐसे समय में जबकि दलितों के सामाजिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले राजनीतिक दल की स्थिति लगातार कमजोर होती जा रही है तब समाज के इस अहम तबके को प्रतिक्रियावादी एवं सांप्रदायिक राजनीति के नुमाइंदों के बहकावे से बचाने और बेहतर राजनीतिक विकल्प देने की श्री अखिलेश यादव की पहल का अच्छा असर देखा जा रहा है।

यहां यह उल्लेख करना जरूरी है कि जातीय जनगणना करवाने की जिस मांग को श्री अखिलेश यादव बीते लंबे अरसे से उठा रहे हैं वह भी सामाजिक न्याय के नए अध्याय का अहम पन्ना ही है। जातीय जनगणना होगी तभी संख्या के आधार पर किसी जाति को उसका हक मिल सकेगा। दरअसल जातीय जनगणना ही दलितों और पिछड़ों को उनका वास्तविक हक दिला सकेगी।

यह वही सिलसिला है जिसे 1993 में सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव और बसपा के संस्थापक कांशीराम ने तालमेल करते हुए कायम किया था। लोहिया और अंबेडकर के विचारों को मानने वालों का संगठन और सिद्धांत के स्तर पर करीब आना सामाजिक न्याय की लड़ाई को न सिर्फ और मजबूत करेगा बल्कि सांप्रदायिक ताकतों को तगड़ी चुनौती भी देगा।

लिहाजा समाजवादियों और अंबेडकरवादियों को करीब लाकर सामाजिक न्याय की लडाई को और मजबूत करना ही वर्तमान समय में समय की मांग है और इसमें अपने राजनीतिक एवं सामाजिक दायित्व को समाजवादी पार्टी बखूबी निभा रही है। इसमें कोई शक नहीं कि डॉ लोहिया और डॉ भीमराव अंबेडकर की विचारधारा का मिलन ही इस देश में लोकतंत्र को पतन से बचाकर सभी को सामाजिक न्याय उपलब्ध करा सकता है।

बाबा साहब की जन्मस्थली पर आकर नई ऊर्जा मिली

बुलेटिन ब्यूरो

संविधान निर्माता, भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 14 अप्रैल को मध्यप्रदेश के महू में बाबा साहब की जन्मस्थली पहुंचकर उन्हें नमन किया। उनके साथ राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयंत चौधरी व भीम आर्मी के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद भी थे। सभी ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए संविधान और देश के निर्माण में बाबा साहब के महान योगदान को याद किया।

बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि बाबा साहब की जन्मस्थली में हम सबको नई ऊर्जा मिली है। हमने बाबा साहब के बताएं रास्ते पर चलने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब की जन्मस्थली हमें प्रेरणा देती है कि उन्होंने जो रास्ता दिखाया है उस पर चलें। बाबा साहब ने गरीबों, कमजोरों, शोषितों को ताकत देने के लिए संविधान दिया। उन्होंने समाज के अन्याय, भेदभाव और तमाम कुरीतियों से लड़कर देश और समाज को दिशा दी। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज संविधान पर खतरा मंडरा रहा है। भाजपा सरकार एक-एक करके संवैधानिक और सरकारी संस्थाओं को खत्म कर रही है। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने संकल्प लिया है कि बाबा साहब ने कमजोर और शोषित लोगों की ताकत के लिए जो संविधान दिया है, उसे बचाएंगे।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के पास महंगाई, बेरोजगारी को लेकर कोई जवाब नही है। उद्योगपति देश छोड़कर बाहर जा रहे हैं। बैंको का पैसा लेकर कई उद्योगपति चले गए लेकिन सरकार कोई जवाब नही दे रही है।

बहुजन समाज को बांधने निकले हैं समाजवादी

रायबरेली में मान्यवर कांशीराम की प्रतिमा का अनावरण

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 3 अप्रैल को रायबरेली के मान्यवर कांशीराम महाविद्यालय चरूहार, जियायक में सामाजिक परिवर्तन के महानायक मान्यवर कांशीराम जी की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद कहा कि समाजवादी आंदोलन में डॉ राममनोहर लोहिया ने जो रास्ता दिखाया था, यह वही रास्ता है जोकि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर ने दिखाया था। समाजवादी पार्टी के संस्थापक श्री मुलायम सिंह यादव-नेताजी व मान्यवर कांशीराम जी भी उसी रास्ते पर चले। दोनों के रास्ते एक ही थे। इसी रास्ते पर चलकर सामाजिक न्याय लाया जा सकता है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा आयोजित विशाल समारोह को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हम बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर और मान्यवर कांशीराम के रास्ते पर चलने वाले लोग हैं। आज समाज को जोड़ने की जरूरत है। भेदभाव होने के बाद मान्यवर कांशीराम ने जो शुरुआत की, उससे परिवर्तन आया। उन्होंने बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर के रास्ते पर चलकर समाज के सबसे पिछड़े

तबके के लोगों को जगाने के लिए घर-घर जाकर काम किया।

उन्होंने कहा कि हम बहुजन समाज में सेंध लगाने नहीं बल्कि बहुजन समाज को बांधने वाले हैं। उन्होंने कहा कि नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव और मान्यवर कांशीराम ने देश में एक नई तरह की राजनीति शुरू की थी। नेताजी ने मान्यवर कांशीराम जी को इटावा से लोकसभा जिताकर संसद में पहुंचाने में मदद की थी। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि श्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने अपनी संस्था में मान्यवर कांशीराम जी की प्रतिमा लगवाकर जिस राजनीति की शुरुआत की है, उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं।

उन्होंने कहा कि सबका साथ, सबका विकास तभी हो सकता है, जब जातीय जनगणना हो। बिना जातीय जनगणना के सामाजिक न्याय और सबका साथ-सबका विकास संभव ही नहीं है। भाजपा जिस तरह के फैसले ले रही है, उसमें पिछड़ों, दलितों गरीबों की गिनती नहीं होगी। निजीकरण के बाद पिछड़ों, दलितों को संविधान में दिए गए अधिकार कैसे मिलेंगे?

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह लड़ाई लंबी है। समाजवादियों ने बहुत प्रयोग किए। हमने भी कोशिश की। बसपा से गठबंधन भी किया। बसपा जीरो से दस पहुंच गई थी। आज बसपा के सभी बड़े नेता समाजवादी पार्टी में हैं। उन्होंने लोगों को आगाह कराया कि भाजपा दूसरों का साथ लेकर भी चुनाव लड़ती है इसलिए भाजपा के साथ ही उन लोगों से भी सावधान रहना जोकि भाजपा की अपरोक्ष रूप से मदद करते हैं। श्री यादव ने कहा कि जनता जागरुक हुई है। बदलाव की तरफ चल पड़ी है और आने वाले समय में लोकसभा चुनाव 2024 और 2027 के विधानसभा चुनाव में देश और उत्तर प्रदेश में बदलाव होगा।

समारोह में राष्ट्रीय महासचिव श्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा कि आज नौजवानों की सरकारी नौकरियां छिन रही । भाजपा सामाजिक सद्भाव तोड़ रही हैं और लोकतंत्र खतरे में है। संविधान की मर्यादा के साथ खिलवाड़ हो रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा पिछड़ों, दलितों के आरक्षण को निष्प्रभावी कर रही है। समाज को हिन्दू मुस्लिम में लड़ाने की कोशिश कर रही है। भाजपा ने पहले भी यही किया था मगर तब देश के दो बड़े नेता मान्यवर कांशीराम जी और नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने मिलकर गठबंधन कर भाजपा का सफाया किया था।

इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने श्री स्वामी प्रसाद मौर्य के पिताजी स्वर्गीय बदलू मौर्य की प्रतिमा का भी अनावरण किया।

इससे पूर्व रायबरेली पहुंचने पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का विधानसभा में समाजवादी पार्टी के मुख्य सचेतक श्री मनोज कुमार पाण्डेय ने रायबरेली ऊंचाहार के टिकट्ठा मुसल्लेपुर में में भव्य स्वागत किया।

समाजवादियों ने बाबा साहब को याद किया

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती श्रद्धापूर्वक सादगी से मनाई। पूरे प्रदेश में समाजवादी पार्टी कार्यालयों पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम हुए और बाबा साहब की नीतियों, उनके विचार व देश के प्रति उनके महान योगदान पर विस्तृत चर्चा की गई।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल की अध्यक्षता में श्रद्धापूर्वक मनाई गई। राष्ट्रीय महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य समेत सैकड़ों की संख्या में मौजूद पार्टी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों ने बाबा साहब को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस मौके पर राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी द्वारा प्रस्तुत भारत के संविधान की प्रस्तावना को सभी ने दोहराया और उसे अपनाने का संकल्प लिया।

जयंती पर स्वामी प्रसाद मौर्य, आर.के.चौधरी, सर्वेश अंबेडकर एवं जुगल किशोर बाल्मीकि ने कहा कि भाजपा के कारण बाबा साहब द्वारा निर्धारित आरक्षण खतरे में है। लोकतंत्र और संविधान पर हमले हो रहे हैं। संविधान की प्रस्तावना को भुलाया जा रहा है। समता, समानता के सिद्धांतों की उपेक्षा कर चंद हाथों में राष्ट्रीय संपत्ति सौंपी जा रही है। वक्ताओं ने कहा कि हम सभी को बाबा साहब के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लेना होगा।

सभी वक्ता इस बात पर एकमत थे कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में ही बाबा साहब के सपनों को पूरा करने की दिशा में सभी संघर्षरत हैं। सभी मिलकर वंचितों, शोषितों को हक और सम्मान दिलाएंगे।

अंबेडकर जयंती पर मैनपुरी में शोभा यात्रा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी की मैनपुरी से सांसद श्रीमती डिंपल यादव ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जयंती पर मैनपुरी में उन्हें नमन करने के बाद शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर श्रीमती डिंपल यादव ने चिंता जाहिर की कि बाबा साहब का बनाया हुआ संविधान खतरे में है। उसे बचाने के लिए समाजवादी साथियों को संघर्ष करना होगा।

डिंपल यादव जी ने 14 अप्रैल को मैनपुरी के कई क्षेत्रों में बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर जयंती पर कार्यक्रमों में शिरकत की। कार्यक्रम में सपा सांसद ने सबसे पहले बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

मैनपुरी शहर के छपट्टी मोहल्ला में आयोजित अंबेडकर जयंती कार्यक्रम में श्रीमती डिंपल यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में संविधान खतरे में है। नियम-कानूनों की धज्जियां उड़ रही हैं। जनता सच्चाई जान चुकी है और आने वाले दिनों बदलाव होने जा रहा है।

उन्होंने कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है। बाबा साहब ने सभी को जीने का अधिकार दिया। समानता का अधिकार दिया। खुली हवा में सांस लेने का अधिकार दिया है। बाबा साहब के बताए रास्ते पर ही चलकर देश में बेहतर समाज का निर्माण किया जा सकता है। लोग एक दूसरे का सम्मान करेंगे। कोई छोटा-बड़ा नहीं होगा। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव जी की सरकार में सभी के लिए समान रूप से काम होता था। कोई भेदभाव नहीं था मगर भाजपा सरकार भेदभाव कर रही है। मैनपुरी के विकास के बारे में सरकार ने कोई ठोस कदम नहीं उठाए हैं। लोगों को मूलभूत मुद्दों से दूर किया जा रहा है।

श्रीमती डिंपल यादव ने इससे पूर्व करहल के मोहल्ला जाटवान के अंबेडकर पार्क पहुंचकर डा. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

अंबेडकर और लोहिया की
विरासत का संगम

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

भारत की सामाजिक न्याय की शक्तियां हिंदुत्व की प्रतिक्रांति को पलटने के लिए बेचैन हैं। एक ओर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने 3 अप्रैल को आल इंडिया फेडरेशन फार सोशल जस्टिस की ओर से चेन्नई में तकरीबन 20 गैर भाजपा पार्टियां का सम्मेलन करके सामाजिक न्याय के अभियान को आगे बढ़ाने का आह्वान किया है तो दूसरी ओर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अंबेडकर और कांशीराम की विरासत को अपने संघर्ष से एक मंच पर लाने की गंभीर पहल की है। डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती 14 अप्रैल पर उनकी जन्मस्थली महू में राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयंत चौधरी और चंद्रशेखर आजाद के साथ पहुंचना और उससे पहले तीन अप्रैल को रायबरेली के ऊंचाहार में मान्यवर कांशीराम की प्रतिमा का अनावरण ऐसे प्रयास हैं जो दिखाते हैं कि वे डॉ अंबेडकर और डॉ लोहिया के 67 साल पहले किए गए प्रयास को परिणाम की तक पहुंचाने में लग गए हैं। जाहिर सी बात है कि उनके इस प्रयासों से जहां गैर भाजपा और देश के लोकतंत्र को बचाने में लगी राजनीतिक शक्तियां उत्साहित हैं वहीं बसपा नेता मायावती को यह बात नागवार गुजर रही है।

रायबरेली में जब अखिलेश ने कांशीराम की मूर्ति का अनावरण किया तो मायावती ने उसे नौटंकी बताया। वजह यह है कि लखनऊ में कांशीराम के साथ मूर्ति लगवाकर उन्होंने उस पर एक मात्र उत्तराधिकारी लिखवा रखा है जबकि वास्तव में वे उनके उत्तराधिकार को नष्ट कर रही हैं।

बाबरी मस्जिद गिराए जाने के बाद 1993 में जब नारा लगा था कि `मिले मुलायम कांशीराम हवा में हो गए जयश्रीराम' तब सांप्रदायिक ताकतों को बड़ा झटका लगा और उत्तर प्रदेश में उन्हें पराजय मिली थी। मुलायम और कांशीराम की इस एकता ने देश की राजनीति में नया समीकरण प्रस्तुत किया था। लेकिन सांप्रदायिक ताकतों ने उस गठबंधन को लंबे समय तक चलने नहीं दिया। फूट डालकर उसे विखंडित कर दिया। उसके बाद मायावती तीन बार भाजपा के सहयोग से मुख्यमंत्री बनीं। स्वामी धर्मतीर्थ ने अपनी पुस्तक `हिस्ट्री आफ हिंदू इम्पीरियलिज्म' में साफ कहा है कि जब इस देश में जाति व्यवस्था के विरुद्ध निचली जातियों की गोलबंदी होती है तब ऊंची जातियां किसी न किसी साजिश से उसे तोड़ देती हैं। वे बड़े बड़े सामाजिक सुधार आंदोलन और राजनीतिक परिवर्तन के आंदोलन को हजम कर लेती हैं। वैसा ही सपा बसपा गठबंधन के साथ भी हुआ।

वास्तव में भारतीय राजनीति की यह विडंबना रही है कि यहां सामाजिक न्याय और राजनीतिक स्वतंत्रता और समावेशी राष्ट्रीयता की लड़ाई लड़ने वाली ताकतों के बीच पहले अंग्रेजों ने फूट डाली और अब हिंदुत्ववादी ताकतें डाल रही हैं। इस दरार को पहले महात्मा गांधी ने महसूस किया और पूना समझौते के बाद अपने हाथ में अछूतोद्धार का कार्यक्रम लिया। हिंदू धर्म में इस सुधार के कारण गांधी के काफिले पर पुणे में हमला किया गया और 1948 में उनकी हत्या की वजहों में एक वजह यह भी थी।

वास्तव में डा लोहिया ही ऐसे व्यक्ति थे जो गांधी और अंबेडकर के विचारों के बीच सेतु की तरह से काम कर सकते थे। वरना उन दोनों को एक दूसरे का शत्रु बताने वालों की कमी नहीं है। वे दोनों की अनिवार्यता को समझते थे और इसीलिए कहते थे कि अगर स्वतंत्रता आंदोलन पिछड़ी और दलित जातियों के नेतृत्व में लड़ा गया होता तो शायद भारत का विभाजन न होता

इस काम को 1956 में डॉ राम मनोहर लोहिया ने हाथ में लिया और डॉ भीमराव अंबेडकर के साथ राजनीतिक गठबंधन बनाने की कोशिश की। लेकिन संयोग देखिए कि उनकी मुलाकात के पहले ही बाबा साहेब का निधन हो गया। डॉ लोहिया कहते थे कि बाबा साहेब के होने से उन्हें यह यकीन होता था कि एक दिन इस देश से जाति व्यवस्था का नाश होगा। लेकिन डॉ आंबेडकर का निधन 66 साल और डॉ लोहिया का निधन मात्र 56 साल की उम्र में हो गया। डा लोहिया उनसे बीस साल छोटे थे। लेकिन उनकी बेचैनी कम नहीं थी। इसीलिए वे 1958 में रामास्वामी नाइकर उर्फ पेरियार से अस्पताल में मिलने गए और उन्हें समझाते हुए उनके साथ खड़े होने का वचन दिया।

आज जब द्रमुक पार्टी के गठन के सौ साल होने वाले हैं और वायकम सत्याग्रह का शताब्दी वर्ष शुरू होने वाला है और समाजवादी पार्टी की स्थापना के 30 वर्ष पूरे हो चुके हैं तब सामाजिक न्याय की उन तमाम घटनाओं और विचारों को एक साथ जोड़ने और आगे बढ़ाने की जरूरत है। **जाति** जनगणना की मांग और निजी क्षेत्र में आरक्षण की मांग के बहाने सामाजिक न्याय के नए आयाम सामने आ रहे हैं। इन कार्यक्रमों के अलावा यह जानना भी जरूरी है कि कि कैसे डा अंबेडकर और लोहिया का मिलन होते होते रह गया था। वास्तव में डा लोहिया ही ऐसे व्यक्ति थे जो गांधी और अंबेडकर के विचारों के बीच सेतु की तरह से काम कर सकते थे। वरना उन दोनों को एक दूसरे का शत्रु बताने वालों की कमी नहीं है। वे दोनों की अनिवार्यता को समझते थे और इसीलिए कहते थे कि अगर स्वतंत्रता आंदोलन पिछड़ी और दलित जातियों के नेतृत्व में लड़ा गया होता तो शायद भारत का विभाजन न होता। पूरे स्वतंत्रता आंदोलन में ऐसा सोचने वाले लोग बहुत कम थे। बड़े नेताओं के स्तर पर तो डॉ लोहिया गांधी के बाद दूसरे ऐसे नेता थे।

डा अंबेडकर के निधन के बाद उन्हें श्रद्धांजलि देने वाला डा लोहिया का निम्न कथन ध्यान देने लायक है।

``मेरे लिए डा अंबेडकर हिंदुस्तान की

राजनीति के एक महान आदमी थे। और गांधीजी को छोड़कर बड़े से बड़े सवर्ण हिंदुओं के बराबर। इससे मुझे संतोष और विश्वास मिला था कि हिंदू धर्म की जातिप्रथा एक न एक दिन खत्म की जा सकती है।" डा अंबेडकर के बारे में व्यक्त डा लोहिया के इन उद्गारों को ध्यान से पढ़ने की जरूरत है। जब 2019 में उत्तर प्रदेश में अखिलेश और मायावती के बहाने लोहियावादियों और अंबेडकरवादियों की नई एकता हुई थी तो बड़ी उम्मीद बंधी थी। क्योंकि ऐसी एकता में सत्तापरिवर्तन की अल्पकालिक शक्ति तो थी ही उसके सैद्धांतिक समागम में व्यवस्था परिवर्तन की भी ताकत छुपी थी। इसकी शुरुआत तब हुई थी जब उत्तर प्रदेश के दो लोकसभा उपचुनावों में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने एक साथ आकर कमल को हराने का कमाल किया था। उसी के कारण भाजपा फूलपुर में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की सीट तो हारी ही गोरखपुर की अजेय कही जाने वाली योगी आदित्यनाथ की सीट भी गंवा बैठी। यह तो रही सत्ता में दखल देने की ताकत लेकिन इन विचारधाराओं की सामाजिक क्रांति की शक्ति को भी पहचानने की जरूरत है।

डॉ अंबेडकर और डॉ लोहिया दोनों के भीतर भारतीय जाति व्यवस्था के विरुद्ध आक्रोश की ज्वाला धधक रही थी। वे उसे भस्म करके दलितों, पिछड़ों, किसानों और मजदूरों के लिए बराबरी पर आधारित समाज बनाना चाहते थे। डॉ लोहिया इसे समाजवाद का नाम देते थे लेकिन डॉ अंबेडकर इसे गणतंत्र कहते थे।

डॉ अंबेडकर चाहते थे कि वे अपनी शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन को भंग करके सर्वजन समावेशक रिपब्लिकन पार्टी बनाएं। इसी उद्देश्य से उन्होंने डॉ राम मनोहर लोहिया से पत्राचार किया था। उधर कांग्रेस से लड़ने के लिए डॉ लोहिया को बाबा साहेब जैसे दिग्गज बुद्धिजीवी का साथ चाहिए था। इसलिए डॉ लोहिया ने 10 दिसंबर 1955 को हैदराबाद से बाबा साहेब को पत्र लिखा, `` प्रिय डॉक्टर आंबेडकर, मैनकाइंड(अखबार) पूरे मन से **जाति** समस्या को अपनी संपूर्णता में खोलकर रखने का प्रयत्न करेगा। इसलिए आप अपना कोई लेख भेज सकें तो प्रसन्नता होगी। आप जिस विषय पर चाहें लिखिए। हमारे देश में प्रचलित जाति प्रथा के किसी पहलू पर आप लिखना पसंद करें, तो मैं चाहूंगा कि आप कुछ ऐसा लिखें कि हिंदुस्तान की जनता न सिर्फ क्रोधित हो

बल्कि आश्चर्य भी करे। मैं चाहता हूं कि क्रोध के साथ दया भी जोड़नी चाहिए। ताकि आप न सिर्फ अनुसूचित जातियों के नेता बनें बल्कि पूरी हिंदुस्तानी जनता के भी नेता बनें। मैं नहीं जानता कि समाजवादी दल के स्थापना सम्मेलन में आप की कोई दिलचस्पी होगी या नहीं। सम्मेलन में आप विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में आ सकते हैं। अन्य विषयों के अलावा सम्मेलन में खेत मजदूरों, कारीगरों, औरतों, और संसदीय काम से संबधित समस्याओं पर भी विचार होगा और इनमें से किसी एक पर आपको कुछ बात कहनी ही है।"

अलग अलग व्यस्तताओं और कार्यक्रम में तालमेल न हो पाने के कारण वे दोनों तो नहीं मिले लेकिन डा लोहिया के दो मित्र विमल मेहरोत्रा और धर्मवीर गोस्वामी ने बाबा साहेब अंबेडकर से मुलाकात की। इस मुलाकात की पुष्टि करते हुए और उसके प्रति उत्साह दिखाते हुए बाबा साहेब ने डॉ लोहिया को पत्र लिखा, `` प्रिय डॉक्टर लोहिया आपके दो मित्र मुझसे मिलने आए थे। मैंने उनसे काफी देर तक बातचीत की। अखिल भारतीय शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की कार्यसमिति की बैठक 30 सितंबर 56 को होगी और मैं समिति के सामने आपके मित्रों का प्रस्ताव रख दूंगा। मैं चाहूंगा कि आपकी पार्टी के प्रमुख लोगों से बात हो सके ताकि हम लोग अंतिम रूप से तय कर सकें कि साथ होने के लिए हम लोग क्या कर सकते हैं। मुझे खुशी होगी अगर आप दिल्ली में मंगलवार दो अक्तूबर 1956 को मेरे आवास पर आ सकें। अगर आप आ रहे हैं तो कृपया तार से मुझे सूचित करें ताकि मैं कार्यसमिति के कुछ लोगों को भी आपसे मिलने के लिए रोक सकूं।"

ध्यान रखिए कि उसी महीने में बाबा साहेब अंबेडकर 14 अक्तूबर 1956 को नागपुर में धम्मदीक्षा लेने जा रहे थे। उसी के समांतर वे डॉ लोहिया को भी एक साथ आने के लिए आमंत्रित कर रहे थे। यानी वे धम्मक्रांति करने के बाद राजनीतिक क्रांति की तैयारी भी कर रहे थे और उस काम में लोहिया उन्हें अच्छे साथी प्रतीत होते लगे थे।

इसी आशा के साथ उन्होंने धम्मदीक्षा लेने के बाद कहा था, ``मैं धम्मदीक्षा ग्रहण करने के बाद राजनीति नहीं छोड़ूंगा। बैट लेकर तंबू में लौटने वाला खिलाड़ी नहीं हूं।" गौर करने की बात है कि बाबा साहेब अपने भाषणों में क्रिकेट के रूपक अक्सर इस्तेमाल करते थे। डॉ लोहिया ने बाबा साहेब के पत्र के जवाब में एक अक्तूबर 56 को लिखा, ``आपके 24 सितंबर के कृपा पत्र के लिए बहुत धन्यवाद! आपके सुझाए समय पर दिल्ली पहुंच पाने में बिल्कुल असमर्थ हूं। फिर भी जल्दी से जल्दी आपसे मिलना चाहूंगा। आप से दिल्ली में 19 और 20 अक्तूबर को मिल

सकूंगा। अगर आप 29 अक्तूबर को बंबई में हैं तो वहां आपसे मिल सकता हूं। कृपया मुझे तार से सूचित करें कि इन दोनों तारीखों में कौन सी तारीख आप को ठीक रहेगी। आपकी सेहत के बारे में जानकर चिंता हुई। आशा है आप अवश्य सावधानी बरत रहे होंगे। मैं केवल इतना कहूंगा कि हमारे देश में बौद्धिकता निढाल हो चुकी है। मैं आशा करता हूं कि यह वक्ती है और इसलिए आप जैसे लोगों का बिना रुके बोलना बहुत जरूरी है।"

इस बीच डॉ अंबेडकर से मिलने वाले डॉ लोहिया के मित्रों ने उन्हें 27 सितंबर को पत्र लिखकर पूरा ब्योरा दिया। विमल मेहरोत्रा और धर्मवीर गोस्वामी ने डा लोहिया को लिखा, `` हम लोग दिल्ली जाकर डॉ अंबेडकर जी से मिले। 75 मिनट तक बातचीत हुई। डॉ अंबेडकर आपसे जरूर मिलना चाहेंगे। वे पार्टी का पूरा साहित्य चाहते हैं और मैनकाइंड के सभी अंक। वे इसका पैसा देंगे। वे हमारी राय से सहमत थे कि श्री नेहरू हर एक दल को तोड़ना चाहते हैं जबकि विरोधी पक्ष को मजबूत होना चाहिए। वे मजबूत जड़ों वाले एक नए राजनीतिक दल के पक्ष में हैं। वे नहीं समझते कि मार्क्सवादी ढंग का साम्यवाद या समाजवाद हिंदुस्थान के लिए लाभदायक होगा। लेकिन जब हम लोगों ने अपना दृष्टिकोण रखा तो उनकी दिलचस्पी बढ़ी। हम लोगों ने उन्हें कानपुर के आमक्षेत्र से लोकसभा का चुनाव लड़ने का न्योता दिया। इस ख्याल को उन्होंने नापंसद नहीं किया। लेकिन कहा कि वे आपसे पूरे भारत के पैमाने पर बात करना चाहते हैं। ऐसा लगा कि वे अनुसूचित जाति संघ से ज्यादा मोह नहीं रखते। श्री नेहरू के बारे में जानकारी लेने में उनकी ज्यादा दिलचस्पी थी। वे दिल्ली से एक अंग्रेजी अखबार भी निकालना चाहते थे। वे हम लोगों के दृष्टिकोण को बहुत सहानुभूति, तबीयत और उत्सुकता के साथ, पूरे विस्तार से समझना चाहते थे। उन्होंने थोड़े विस्तार से इंग्लैंड की प्रजातांत्रिक प्रणाली की चर्चा की जिससे उम्मीदवार चुने जाते हैं और लगता है कि जनतंत्र में उनका दृढ़ विश्वास है।"

डॉ अंबेडकर की रुचि यूरोपीय ढंग(सोवियत रूस के मॉडल) के समाजवाद में तो नहीं थी लेकिन डॉ लोहिया के जाति व्यवस्था विरोधी राजनीतिक विचारों में उनकी दिलचस्पी थी। इसी को समझकर डॉ लोहिया अपने साथियों को लिखते हैं, 'तुम लोग डॉ अंबेडकर से बातचीत जारी रखो'

यह पत्र बताता है कि डॉ अंबेडकर की रुचि यूरोपीय ढंग(सोवियत रूस के मॉडल) के समाजवाद में तो नहीं थी लेकिन डॉ लोहिया के जाति व्यवस्था विरोधी राजनीतिक विचारों में उनकी दिलचस्पी थी। इसी को समझकर डॉ लोहिया अपने साथियों को लिखते हैं, ``तुम लोग डॉ अंबेडकर से बातचीत जारी रखो। डॉ अंबेडकर की सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि वे सिद्धांत में अटलांटिक गुट से नजदीकी महसूस करते हैं। मैं नहीं समझता कि इस निकटता के पीछे सिद्धांत के अलावा और भी कोई बात है। मैं चाहता हूं कि डॉ अंबेडकर समान दूरी के खेमे की स्थिति में आ जाएं। तुम लोग अपने मित्र के जरिए सिद्धांत की थोड़ी बहुत बात चलाओ।"

इससे आगे डॉ लोहिया अपने साथियों को लिखते हैं, ``डॉ अंबेडकर को लिखी चिट्ठी की एक नकल भिजवा रहा हूं। अगर वे चाहते हैं कि मैं उनसे दिल्ली में मिलूं तो तुम लोग भी वहां रह सकते हो। मेरा डॉ आंबेडकर से मिलना राजनीतिक नतीजों के साथ इस बात की भी तारीफ होगी कि पिछड़ी और परिगणित जातियां उनके जैसे विद्वान पैदा कर सकती हैं।"

बाबा साहेब अंबेडकर ने लोहिया को 5 अक्तूबर को लिखा, ``आपका 1 अक्तूबर 56 का पत्र मिला। अगर आप 20 अक्तूबर को मुझसे मिलना चाहते हैं तो मैं दिल्ली में रहूंगा। आपका स्वागत है। समय के लिए टेलीफोन कर लेंगे।"

लेकिन मुलाकात का वह संयोग नहीं आया और आ गया छह दिसंबर 1956 का दुर्योग। उस दिन बाबा साहेब का परिनिर्वाण हो गया और उनकी और डा लोहिया की इतिहास की धारा बदलने की संभावना वाली भेंट नहीं हो सकी। लेकिन डॉ आंबेडकर के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए लोहिया ने मधु लिमए को जो पत्र लिखा वह बाबा साहेब के प्रति लोहिया के अगाध प्रेम और अपार सम्मान को व्यक्त करने वाला है। लोहिया लिखते हैं, `` मुझे डाक्टर अंबेडकर से हुई बातचीत उनसे संबंधित चिट्ठी पत्री मिल गई है और उसे मैं तुम्हारे पास भिजवा

रहा हूं। तुम समझ सकते हो कि डा आंबेडकर की अचानक मौत का दुख मेरे लिए थोड़ा बहुत व्यक्तिगत रहा है और वह अब भी है। मेरी बराबर आकांक्षा रही है कि वे मेरे साथ आएं, केवल संगठन में नहीं, बल्कि पूरी तौर से सिद्धांत में भी और यह मौका करीब मालूम होता था। मैं एक पल के लिए भी नहीं चाहूंगा कि तुम इस पत्र व्यवहार को हम लोगों के व्यक्तिगत नुकसान की नजर से देखो। मेरे लिए डॉ अंबेडकर हिंदुस्तान की राजनीति के एक महान आदमी थे। और गांधीजी को छोड़कर वे बड़े से बड़े सवर्ण हिंदुओं के बराबर। इससे मुझे संतोष और विश्वास मिला है कि हिंदू धर्म की जाति प्रथा एक न एक दिन समाप्त की जा सकती है।"

आज डॉ अंबेडकर और डॉ लोहिया के अनुयायियों के समक्ष व्यवस्था परिवर्तन की गंभीर लड़ाई उपस्थित है। समाजवादी अखिलेश यादव ने बाबा साहेब के विचारों को व्यवहार में अपनाने की पूरी तैयारी कर ली है। एक ओर वे लोहिया वाहिनी चलाते हैं तो दूसरी ओर 2021 में बाबा साहेब वाहिनी का गठन किया है। आज समाजवादी कार्यकर्ता डा अंबेडकर की जयंती को धूमधाम से मनाते हैं। अखिलेश यादव अयोध्या मंडल के दलित विधायक अवधेश प्रसाद को विधानसभा में अपने बगल में बिठाते हैं। उनके यह कार्यक्रम बाबा साहेब की उस उक्ति को चरितार्थ करते हैं कि कोई भी विचार अपने वाहकों से जिंदा रहता है। अगर उसे आगे बढ़ाने वाले नहीं रहे तो वह मर जाता है। ऐसे में समाज के अंबेडकर और लोहिया के विचारों में यकीन करने वाले पिछड़े और दलित समाज के लोगों का यह फर्ज बनता है कि वे हिंदुत्व की सोशल इंजीनियरिंग में न भटकें और बसपा की जलन की राजनीति से बाहर आएं। क्योंकि अगर यह दोनों स्थान एक ही हैं। इन स्थानों से न तो उन्हें न्याय मिलने वाला है और न ही भारत का लोकतंत्र और उसकी एकता बचने वाली है। आज इस एकता को कायम करना समय की मांग है क्योंकि 2024 का समय 1977 और 1992 के समय से भी कहीं कठिन है। इस चुनाव में यह तय होना है कि इस देश में लोकतंत्र रहेगा या तानाशाही आ जाएगी।

जातीय जनगणना से मिलेगा खटिक समाज को हक

राष्ट्रवादी खटिक विकास समिति का रजत जयंती समारोह

बुलेटिन ब्यूरो

राष्ट्रवादी खटिक विकास समिति का रजत जयंती समारोह 28 मार्च को कानपुर में धूमधाम से मनाया गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव व विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने शिरकत की।

लाजपत भवन में रजत जयंती समारोह का आयोजन पूर्व डीजी एस.एन. चक ने किया था। समारोह में सबसे पहले समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का भव्य स्वागत किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि खटिक समाज की आबादी काफी अधिक है मगर उन्हें उनका वाजिब हक नहीं मिल पा रहा है इसलिए समाजवादी पार्टी जातीय जनगणना की मांग कर रही है ताकि आबादी के हिसाब से सभी जातियों को उनका हक मिल सके। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना ही सभी को बराबर हक देने का एकमात्र जरिया है।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार चरम पर है। लोग त्राहिमाम त्राहिमाम कर रहे हैं। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा पर सबसे ज्यादा जोर दिया था लेकिन भाजपा सरकार, शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद कर रही है ताकि गरीबों के बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाएं और आगे न बढ़ सकें।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को हराने के लिए कांग्रेस को क्षेत्रीय दलों को आगे करना चाहिए। क्षेत्रीय दल अपने-अपने राज्यों में बहुत मजबूत हैं, कई राज्यों में क्षेत्रीय दलों की ही सरकार है। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी ही भाजपा का विकल्प है।

समारोह में राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि भाजपा सरकार सभी मोर्चों पर फेल है। गरीबों के साथ अन्याय हो रहा है। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल, विधायक अमिताभ बाजपेयी एवं पूर्व विधायक सतीश निगम भी मौजूद थे।

बाबा साहब वाहिनी का संविधान रक्षा का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी की बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी ने पूरे उत्तर प्रदेश के जिलों में 'संविधान बचाओ' कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर संविधान रक्षा का संकल्प लिया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर अंबेडकर वाहिनी प्रदेश के जिलों में लगातार कार्यक्रम कर कार्यकर्ताओं को बता रही है कि बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर के बनाए संविधान के साथ भाजपा सरकार किस तरह

खिलवाड़ कर रही है। वाहिनी कार्यकर्ताओं को बताने में जुटी है कि जातीय जनगणना क्यों जरूरी है।

मार्च के महीने से उत्तर प्रदेश के जिलों में अंबेडकर वाहिनी का यह प्रशिक्षण शिविर चल रहा है। शिविरों में वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती बता रहे हैं कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में ही लोकतंत्र को बचाया जा सकता है। समाजवादी पार्टी और उसके अध्यक्ष एकमात्र ऐसे नेता हैं जोकि पिछड़ों, दलितों, वंचितों, शोषितों, अल्पसंख्यकों व सभी वर्ग के उत्थान व उनका हक दिलाने के लिए सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं।

'संविधान बचाओ' कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर गाजीपुर, चंदौली, अलीगढ़, मिर्जापुर, गोरखपुर, लखीमपुर खीरी, हरदोई आदि जिलों में संपन्न हुआ। कार्यक्रमों में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर, डॉ राम मनोहर लोहिया, मुलायम

सिंह यादव-नेताजी के चित्र पर माल्यार्पण करने के बाद कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण शिविर में कार्यकर्ताओं को बताया गया कि देश में आपातकाल जैसे हालात पैदा हो गए हैं। सच पर पहरा बैठा दिया गया है। संवैधानिक संस्थाओं के जरिए विपक्ष का दमन किया जा रहा है। सभी अंबेडकरवादियों को एक मंच पर आना चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के मन में खोट है इसलिए वह जातीय जनगणना से भाग रही है। भाजपा जाति धर्म के नाम पर झगड़े कराती है जिससे शोषित समाज अपना हक न मांग सके। शिविरों में वक्ताओं ने कहा कि दलित, शोषित, वंचित समाज समाजवादी पार्टी के तरफ बहुत आशा भरी निगाह से देख रहा है। शिविर में सभी इस बात पर चिंतित थे कि प्रदेश में दलितों और महिलाओं पर अत्याचार बढ़े हैं इसलिए 2024 के लोकसभा चुनाव में सामाजिक न्याय के लिए दलितों, पिछड़ों, शोषितों, वंचितों और संविधान प्रेमियों को समाजवादी पार्टी के पक्ष में लामबंद होना होगा।

प्रशिक्षण शिविरों में बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती, पूर्व सांसद जगदीश कुशवाहा, जंगीपुर विधायक डॉ वीरेन्द्र यादव, विधायक जयकिशन साहू, बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी निवर्तमान राष्ट्रीय महासचिव सत्यप्रकाश सोनकर, पूर्व विधायक त्रिवेणी राम, पूर्व मंत्री उमाशंकर कुशवाहा, राजेश कुशवाहा, अमित ठाकुर, सत्य नारायण राजभर, महेंद्र राव पूर्व विधायक श्री जितेन्द्र एडवोकेट, महेन्द्र राव, पूर्व सांसद रामकिशुन यादव, विधायक प्रभु नारायण यादव, सत्य प्रकाश सोनकर, आर के प्रसाद, चंद्रशेखर यादव, सुजीत कुमार भारती, निरंजन कन्नोजिया, त्रिलोकी पासवान, नीलम बीयर, मुसाफ़िर चौहान आदि ने प्रमुख रूप से शिरकत की।

भाजपा से हिसाब लेंगे शहरी वोटर

बुलेटिन ब्यूरो

सभी मोर्चों पर नाकाम सत्तारूढ भारतीय जनता पार्टी निकाय चुनाव को लेकर परेशान है क्योंकि उसके पास शहरी वोटर्स के सवालों के जवाब नहीं है।

उत्तर प्रदेश में है शहरी निकायों के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और शुरुआती दौर में ही भाजपा शहरी वोटर्स के सवालों से लाजवाब हो गई है। भाजपा से निराश शहरी मतदाता श्री अखिलेश यादव के विकास के मॉडल को विकल्प मान रहा है लिहाजा इसके स्पष्ट संकेत हैं कि निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी को जनता का व्यापक समर्थन मिलने जा रहा है।

शहरी मतदाता भाजपा से बुरी तरह से

नाराज हैं। स्मार्ट सिटी बनाए जाने के उसके वायदे की पोल खुल चुकी है। अखिलेश सरकार की नकल करने के चक्कर में कई शहरों में मेट्रो सेवा शुरू करने की घोषणा भी उसके गले की फांस बन चुकी है क्योंकि ये वायदे पूरे करने में भाजपा विफल रही है। शहरी वोटर्स भी तैयार बैठा है कि भाजपा नेता वोट मांगने आएं तो उनसे सवाल-जवाब किया जाए। शहरी वोटर्स के पास सवालों की लंबी फेहरिस्त है।

भाजपा ने शहरी वोटर्स के लिए 2014, 2019, 2017 और 2022 में तमाम वायदे किए थे। सबसे बड़ा वायदा यूपी के कई शहरों में स्मार्ट सिटी बनाने का था। भाजपा ने वायदा किया था कि शहरों को प्रदूषण मुक्त कराएंगे, सफाई की उत्तम व्यवस्था होगी। भाजपा ने सपना दिखाया था कि जब यूपी के जिले स्मार्ट सिटी हो जाएंगे तो नगरीय सुविधाओं को मोबाइल इंटरनेट, ई-सुविधा केंद्रों की मदद से स्मार्ट कर दिया जाएगा, तब हेल्थ, एजूकेशन, कम्युनिकेशन, पॉवर सप्लाई सब स्मार्ट हो जाएगी। अब शहरी वोटर्स एक ही सवाल कर रहे हैं कि यह सब हुआ क्या?

यूपी के शहर तमाम समस्याओं से जूझ रहे हैं। गंदगी, जलजमाव, जलनिकासी, अनियिमित हाऊस टैक्स, नक्शा पास कराने, जलापूर्ति के अलावा ट्रैफिक जाम और उसमें नगर निकायों की नाकाम व्यवस्था आम जन को हैरान-परेशान किए हुए है। कोई भी शहर ऐसा नहीं है जहां कूड़े का अंबार न लगा हो।

भाजपा सरकार ने वायदा किया था कि स्मार्ट सिटी योजना में सबसे ज्यादा प्राथमिकता स्मार्ट गवर्नेंस, स्मार्ट एनर्जी, स्मार्ट ट्रांसपोर्ट, स्मार्ट कम्युनिकेशन आदि होगा। अब जनता

यह सवाल कर रही है कि यह सब हुआ क्या? स्थानीय मुद्दों पर भाजपा बुरी तरह घिरी हुई नजर आ रही है। जनता चुनाव में यह हिसाब मांगने वाली है कि शहरों-कस्बों में गंदगी क्यों, सफाई व्यवस्था का इतना बुरा हाल क्योंकर है। यह सवाल इसलिए भी उठ खड़ा हुआ है कि गंदगी की वजह से शहरों-कस्बों में लगातार डेंगू व टायफायड जैसी बीमारियों ने लोगों की दिक्कतें बढ़ाई हैं।

निकाय चुनाव में जनता के पास भाजपा से सवाल करने के लिए इतने मुद्दे हैं कि भाजपा प्रत्याशी व उनके समर्थक बगलें झांक रहे हैं। महंगाई, बेरोजगारी से जूझ रहे लोग यह हिसाब लेने के लिए तैयार बैठे हैं कि रसोई गैस इतनी महंगी क्यों? अब रसोई गैस का दाम एक हजार से ज्यादा होने पर भी भाजपा के लोग पहले की तरह हायतौबा क्यों नहीं करते?

इस बार निकाय चुनाव में मुद्दों की भरमार है। पूरे यूपी में गंदगी, जलजमाव की समस्या तो है ही, स्थानीय स्तर पर भी तमाम ऐसी समस्याओं से शहरी वोटर जूझ रहे हैं कि उन सबका हिसाब लेने का उन्हें निकाय चुनाव से बेहतर समय नहीं लग रहा है।

क्षेत्रीय दल ही विकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा के अगले चुनाव में क्षेत्रीय दलों की बहुत बड़ी भूमिका होने जा रही है। इसके स्पष्ट संकेत दिख रहे हैं कि भाजपा को सत्ता से बेदखल क्षेत्रीय दल ही कर सकते हैं। चाहे उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी हो या फिर बिहार में जनता दल यूनाइटेड और राजद का गठबंधन या पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस एवं महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना का गठबंधन। इन सभी राज्यों में क्षेत्रीय दल ही भाजपा से मुकाबला कर रहे हैं एवं उसे शिकस्त देने का माद्दा रखते हैं।

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल ही विपक्ष की एका और 2024 के लोकसभा चुनाव की रणनीति का ताना-बाना बुन रहे हैं। इसी सिलसिले में बिहार के मुख्यमंत्री एवं जनता दल यूनाइटेड के नेता नितीश कुमार ने 24 अप्रैल को लखनऊ पहुंच कर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से मुलाकात की। श्री नीतीश कुमार के साथ बिहार के उपमुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव भी थे। श्री अखिलेश यादव से लखनऊ आकर नीतीश जी की मुलाकात इसका स्पष्ट संकेत है कि लोकसभा के चुनाव में क्षेत्रीय दलों को कमान सौंपने की अखिलेश जी की राय को विपक्ष के बाकी वरिष्ठ नेता भी तवज्जो दे रहे हैं। श्री अखिलेश यादव ने उनसे मिलने आए दोनों वरिष्ठ नेताओं को भरोसा दिलाया कि

भाजपा के खिलाफ लड़ाई में समाजवादी पार्टी पूरा साथ देगी।

उल्लेखनीय है कि विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय दल ही क्षत्रप हैं इसे बेहद बेबाकी से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने पहले ही रेखांकित करते हुए कांग्रेस की राजनीतिक ताकत की सीमाओं की मीमांसा कर दी है। हाल में कोलकाता में संपन्न सपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में श्री अखिलेश यादव ने अपनी यह राजनीतिक लाइन घोषित कर दी कि राज्यों में क्षेत्रीय दल ही भाजपा के खिलाफ मुख्य ताकत हैं।

उनका स्पष्ट मत है कि कांग्रेस को क्षेत्रीय दलों को ही आगे करना पड़ेगा एवं राष्ट्रीय पार्टी के रूप में उसे अपनी भूमिका खुद तय करनी होगी। दरअसल श्री अखिलेश यादव का बयान कोलकाता में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस की मुखिया सुश्री ममता बनर्जी से मुलाकात के बाद आया। उल्लेखनीय है कि ममता जी भी ऐसे संकेत दे चुकी हैं कि विपक्षी एकता का नेतृत्व कांग्रेस ही करें ऐसा जरूरी नहीं क्योंकि क्षेत्रीय दलों की ताकत ज्यादा है एवं भाजपा से क्षेत्रीय दल ही लगातार मुकाबला कर रहे हैं।

यदि राजनीतिक परिदृश्य को देखें तो तमिलनाडु में डीएमके , उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी , पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस एवं आंध्र प्रदेश में जगन मोहन रेड्डी की पार्टी और उड़ीसा में बीजू जनता दल क्षेत्रीय पार्टी की हैसियत से पर्याप्त ताकतवर हैं और भाजपा से टक्कर ले रहे हैं। वही राष्ट्रीय पार्टी होने के बावजूद कांग्रेस कुछ राज्यों तक सिमट कर रह गई है। ऐसे में राजनीति का व्यवहारिक पक्ष यही संदेश दे रहा है कि

यदि 2024 में भाजपा को सत्ता से बेदखल करना है तो क्षेत्रीय दलों को अहमियत देनी होगी क्योंकि क्षेत्रीय दल ही क्षत्रप हैं।

क्षेत्रीय दलों को अवाम ने यूं ही मजबूत नहीं किया, बल्कि वह समझ चुकी है कि क्षेत्रीय दल ही उनके राज्य, उनकी जरूरतों के हिसाब से मुद्दों को समझ पाते हैं और समस्याओं का निदान आसानी से निकाल पाने में सक्षम हैं। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि राष्ट्रीय दलों वाली किसी भी सरकार ने कभी भी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नए दौर की तकनीक पर गौर नहीं किया, मगर समाजवादी पार्टी की अखिलेश सरकार ने समझा कि अगर प्रदेश के नौजवानों को आगे बढ़ाना है तो उन्हें तकनीक से जोड़ना होगा, छात्रों को लैपटाप देने की उनकी योजना इसी का परिणाम है जिसे पूरे देश के राज्यों ने सराहा। ऐसे ही खेत-खलिहान, गांव-गली तक 1 0 8 एंबुलेंस सेवा और कानून व्यवस्था के लिए डायल 100 जैसे उदाहरण हैं।

देश-प्रदेश की अवाम जितनी तकलीफ से गुजर रही है, उसे 2024 में भाजपा के मुकाबले मजबूत विकल्प देने का यही सही समय है। क्षेत्रीय दलों की अपने राज्यों में मजबूत पैठ है। क्षेत्रीय दल जिस तरह राज्यों में भाजपा के रथ को रोके हुए हैं, आगे भी 2024 में उनमें ही भाजपा को रोकने की कूवत है।

क्षेत्रीय दलों का समर्थन करे कांग्रेस

-अखिलेश

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 2024 के लोकसभा चुनाव में क्षेत्रीय दलों की भूमिका पर बेबाकी से राय रखते हुए कहा है कि भाजपा को हटाने के लिए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को क्षेत्रीय दलों का समर्थन करना चाहिए। एक विशेष साक्षात्कार में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर अपना नजरिया स्पष्ट किया। प्रस्तुत है विशेष साक्षात्कार के मुख्य अंश-

बुलेटिन ब्यूरो

सवाल: लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ विपक्षी पार्टियों का मोर्चा होगा या कांग्रेस के बिना?

जवाब: सपा का गठन, भाजपा और कांग्रेस के खिलाफ हुआ है। हम डॉ. राममनोहर लोहिया, डॉ. भीमराव अंबेडकर और नेताजी मुलायम सिंह यादव के सिद्धांतों पर चलने वाले हैं। आज पूरा देश बदलाव चाहता है। तमिलनाडु में एमके स्टालिन, तेलंगाना में के. चंद्रशेखर राव, पश्चिमी बंगाल में ममता बनर्जी की पार्टी मजबूत हैं। यूपी में सपा मुख्य विपक्षी दल है। इसलिए जिस राज्य में जो क्षेत्रीय पार्टी मजबूत है, कांग्रेस को वहां उस पार्टी को समर्थन करना चाहिए।

भाजपा को हटाने के लिए क्षेत्रीय पार्टियों का सह

सवाल: क्या कांग्रेस इसके लिए तैयार होगी?

जवाब: यह तो कांग्रेस ही बता सकती है। पर इतना ही कहूंगा कि क्षेत्रीय पार्टियों से राष्ट्रीय पार्टी को कोई खतरा नहीं होता है। अलबत्ता राष्ट्रीय पार्टी, क्षेत्रीय पार्टियों को नुकसान जरूर पहुंचा सकती हैं।

सवाल: लोहियावादियों और अंबेडकरवादियों के एक मंच पर आने का कितना फायदा मिलता दिख रहा है?

जवाब - दोनों की लड़ाई एक है। आज सबसे बड़ा सवाल संविधान बचाने का है। डॉ. लोहिया भी चाहते थे कि अंबेडकरवादी साथ आएं। जो भी संविधान बचाना चाहता है, वह सपा की लड़ाई के साथ है।

सवाल: भाजपा का दावा है कि वह रामराज की संकल्पना को साकार कर रही है?

जवाब - सारे सरकारी संस्थानों को बेचकर कौन सा रामराज आएगा, यह बताना चाहिए। क्या देश और प्रदेश संविधान या राज्यपाल व्यवस्था से नहीं, मठ की व्यवस्था से चलाया जाएगा। धर्म ग्रंथों में लिखा है कि माया में रहकर जो माया से दूर रहे वही योगी है। यहां तो अतिक्रमण के नाम पर दुकानें गिराते हैं और कोई मुआवजा नहीं देते जबकि मठ की दीवार तोड़ने पर 60 करोड़ रुपये का मुआवजा ले लिया जाता है। समाजवाद के रास्ते ही रामराज आ सकता है।

सवाल: कोलकाता में हुई सपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का सबसे अहम फैसला क्या रहा?

जवाब - हमारा फोकस संविधान बचाना और उत्तर प्रदेश में लोकसभा की सभी 80 सीटों पर भाजपा को हराना है। इसके लिए हर स्तर पर संघर्ष करेंगे। भाजपा संवैधानिक संस्थानों का दुरुपयोग कर रही है। आरक्षण खत्म करना चाहती है।

सवाल: लोकसभा चुनाव जीतने के लिए क्या तैयारी है?

जवाब - संगठन पूरी तरह से सक्रिय है। ज्यादातर पदाधिकारियों की घोषणा हो चुकी है। शेष सक्रिय हैं। बूथ सम्मेलन करने जा रहे हैं। भाजपा के हर झूठ का पर्दाफाश करेंगे।

सवाल - जातीय जनगणना की मांग अभी तक अनसुनी है?

जवाब - जातीय जनगणना कराने से सरकार डरती है क्योंकि फिर पिछड़ों व दलितों को उनका वाजिब हक देना पड़ेगा। जातीय जनगणना हमारा सर्वोच्च एजेंडा है।

सवाल: कई सपा नेताओं पर कार्रवाई हो रही है?

जवाब - समाजवादी लोग किसी भी दमनात्मक कार्रवाई से झुकने वाले नहीं हैं। नेताजी की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर संघर्ष करेंगे। जो अफसर मनमानी कर रहे हैं, उन्हें भी याद रखना चाहिए कि सरकार तो आती जाती रहती है।

(साभार: अमर उजाला)

क्षेत्रीय दल: लोकतंत्र की बड़ी ताकत

डॉ लक्ष्मण यादव

'भारत विविधता में एकता का देश है', यह एक सूत्र-वाक्य की तरह बचपन से हमें बताया जाता है। सवाल लाज़िम है कि क्या है यह विविधता? इस विविधता में एकता की संकल्पना के मायने क्या हैं? दरअसल भारत में यह विविधता भाषा, जाति, क्षेत्र, धर्म, संस्कृति जैसे अनेक बुनियादी आधारों पर निर्मित हुई है। हरेक समूह के अपने हित हैं। इन सभी अलहदा पहचानों के हितों में अक्सर टकराहट भी देखने को मिलती रही है। ताकतवर समूह अपने हितों के प्रति अधिक सजग होते हैं। अधिकांश समूहों के हितों की पूर्ति इस बात पर निर्भर करती है कि उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और ख़ासकर राजनीतिक आवाज़ कितनी असरदार है। हर समूह को अपने हितों की व्यापक पूर्ति के लिए सजग व सार्थक करना एक लोकतांत्रिक राष्ट्र होने की बुनियादी शर्त है। इस शर्त के निभाने के लिए हर हित समूह की राजनीतिक आवाज़ में

ताक़त भरना लोकतंत्र को बुनियाद है। भारतीय राजनीति की लोकतांत्रिक संरचना के बीच राष्ट्रीय दलों के बरअक्स क्षेत्रीय दलों की ज़रूरत और भूमिका को और अधिक व्यापकता से देखें, तो इस विविधता में एकता की समझ दुरुस्त कर सकेंगे।

राष्ट्र किसी नक्शे पर खींच दी गई लकीरों के बीच घिरा भूगोल मात्र नहीं है। राष्ट्र की आधुनिक संकल्पना के केंद्र में उसके नागरिक और उनका नागरिक बोध है। इस साझा समझ के बीच से भारतीय संघीय ढांचे को आकार दिया गया। आज़ाद भारत की राजनीति का सबसे अहम पहलू तब सामने आता है, जब भारतीय राजनीति में हाशिए पर धकेल दी गई आवाज़ें अपनी सियासी ताक़त पेश करती हैं।

केंद्रीकृत व्यवस्था के बीच उन आवाज़ों के क्षेत्रीय प्रारूपों ने भारतीयता को सार्थक किया। ज़ाहिर है हित समूहों के अंतर्विरोधों के बरअक्स एक केन्द्रीय शासन से चलाने में दिक़्क़त हो सकती थी, लिहाज़ा हमारे आधुनिक भारत निर्माताओं ने भारत में संघीय व्यवस्था का निर्माण कर विकेन्द्रीकरण प्रणाली को अपनाया जिसमें एक केन्द्रीय शासन के साथ विभिन्न राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के लिए अपनी-अपनी राज्य सरकारें हैं। भारत में संघीय शासन होने के कारण नीतियां एवं कार्यक्रम राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं, जिसके कारण स्थानीय स्तर की समस्याएं उपेक्षित हो जाती है या उसपर कम ध्यान दिया जाता है। स्थानीय स्तर के उन्हीं सवालों या मुद्दों को उठाने तथा उसके हल ढूंढने से क्षेत्रीय पार्टी का उदय हुआ।

चूंकि भारत बहु-दलीय व्यवस्था वाला देश है और यहां प्रजातंत्रीय प्रणाली काम करती है इसलिए यहां क्षेत्रीय दल की प्रबलता बढ़ती रही है। दूसरी ओर, कुछ विद्वानों ने क्षेत्रीय दलों के विकास तथा इसके मजबूती में शासन की विकेंद्रीकरण की भूमिका को भी चिन्हित किया है। ऐसे विद्वानों में शामिल डौन ब्रंकाती अपने चर्चित लेख 'द ओरिजिन्स एंड स्ट्रेन्थ ऑफ़ रीजनल पार्टीज़' में लिखते हैं, "राजनीतिक विकेंद्रीकरण का क्षेत्रीय दलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और ऐसा लगता है कि विकेंद्रीकरण क्षेत्रीय दलों को राष्ट्रीय स्तर की तुलना में क्षेत्रीय स्तर पर शासन करने का बेहतर मौका देकर क्षेत्रीय दलों की ताकत को बढ़ाता है।"

भारत में क्षेत्रीय दलों के उभार का एक प्रमुख कारण यहां के समाज में हजारों वर्षों से विद्यमान जाति व्यवस्था है, जो आपस में श्रेणीबद्धता पैदा कर रखा है। यह जातिगत श्रेणियां संसाधन, अवसर व भागीदारी की भी विभाजन रेखाएं हैं

दुनिया के लगभग हर देश और सरकार के लगभग हर स्तर पर क्षेत्रीय दल मौजूद हैं। सरकार पर उसका प्रभाव गहरा माना जाता है; न केवल क्षेत्रीय दलों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने-अपने समूहों का प्रतिनिधित्व करके लोकतंत्र को मजबूत करेगा बल्कि क्षेत्रीय पहचान का ध्यान रखते हुए उसके समस्याओं का समाधान करने तथा उसकी स्वायत्तता या स्वतंत्रता की मांग राज्यों के सामने मजबूती से रखेगा। हालांकि भारत का एक वर्ग अक्सर क्षेत्रीय दलों को राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने, जातीय संघर्ष और अलगाववाद को प्रोत्साहित करने के कारक के रूप में देखता है। यह वह वर्ग है, जिसे कई बार क्षेत्रीय पार्टियों के उभार के कारण हजारों सालों के वर्चस्वशाली सत्ता को चुनौती मिली या उसे कई बार गंवाना पड़ा।

भारत में क्षेत्रीय दलों के उभार का एक प्रमुख कारण यहां के समाज में हजारों वर्षों से विद्यमान जाति व्यवस्था है, जो आपस में श्रेणीबद्धता पैदा कर रखा है। यह जातिगत श्रेणियां संसाधन, अवसर व भागीदारी की भी विभाजन रेखाएं हैं। दस प्रतिशत वाले समूह नब्बे फ़ीसदी समाज पर शासन कर रहे हैं और उसे अपमानित भी कर रहे हैं। बिहार लेनिन बाबू जगदेव प्रसाद कुशवाहा के शब्दों में कहूं तो 'सौ में नब्बे शोषित हैं, शोषितों ने ललकारा है; धन धरती और राजपाट में, नब्बे भाग हमारा है'। वंचित शोषित आवाम की सियासी आवाज़ के रूप में कई क्षेत्रीय दलों का विस्तार भारत में देखने को मिलता है।

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के लिहाज़ से भारत में मुख्य रूप से तीन प्रकार के क्षेत्रीय दलों को देखा जाता है, पहला वे दल जो जाति, धर्म, क्षेत्र अथवा सामुदायिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं एवं उन पर आधारित हैं। ऐसे दलों में उत्तर भारत में जनता पार्टी, लोक दल, समाजवादी पार्टी (सपा), राष्ट्रीय जनता दल (राजद), बहुजन समाज पार्टी (बसपा), झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, लोजपा, जदयू, उत्तर-पश्चिम में अकाली दल, दक्षिण भारत में द्रविड मुन्नेत्र कड़गम (डीएमके) और अन्ना द्रविड मुन्नेत्र कड़गम (एडीएमके),

शिवसेना, कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस, नागालैण्ड नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी आदि प्रमुख हैं। दूसरे में वह दल है, जो किसी समस्या विशेष को लेकर राष्ट्रीय दलों विशेष रूप से कांग्रेस से पृथक होकर बने हैं। ऐसे दलों में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (एनसीपी), केरल कांग्रेस, उत्कल कांग्रेस, विशाल हरियाणा आदि हैं।

तीसरे प्रकार के दलों में वह दल हैं जो लक्ष्यों और विचारधारा के आधार पर तो राष्ट्रीय दल हैं किन्तु उनका समर्थन केवल कुछ लक्ष्यों, कुछ मुद्दों पर केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है; जैसे- भाकपा, माकपा, भाकपा-माले, फारवर्ड ब्लॉक, मुस्लिम लीग, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि। अकाली दल एक राज्य स्तरीय दल है जिसका स्वरूप धार्मिक राजनीतिक रहा है। द्रविड मुन्नेत्र कड़गम और अन्ना द्रविड मुन्नेत्र कड़गम का गठन छुआछूत एवं जात-पात के बन्धनों को मिटाने के लिए हुआ था।

उत्तर भारत में राजद, सपा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रीय दलों का लक्ष्य भी सामंतवाद व जातिवाद का विरोध है। कांग्रेस के कमजोर होने के कारण क्षेत्रीय एवं राज्यस्तरीय दलों का महत्व निरन्तर बढ़ता रहा है, लेकिन आज मौजूदा सत्तासीन दल भाजपा न सिर्फ क्षेत्रीय दलों को ख़त्म कर देना चाहती है बल्कि जिस तरह से विपक्ष पर हमलावर है, लगता है कि देश में एक दलीय शासन व्यवस्था स्थापित करना ही उसका उद्देश्य हो।

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के योगदान को एक अलहदा नजरिए से देखना होगा। विकास के उपरोक्त वर्णित मानकों के आधार पर भारत के क्षेत्रीय दल के योगदान को समझा नहीं जा सकता है। इस क्षेत्रों में कमोबेश हरेक दल या सरकार काम करती है। मगर इन कामों के साथ आम इंसान के जीवन की बुनियादी जरूरतों और जीवन की गुणवत्ता के मानकों में आमूलचूल बदलाव की कसौटी पर कसकर देखें तो क्षेत्रीय दलों की भूमिका क्रांतिकारी नज़र आएगी। क्षेत्रीय दलों का उदय ही एक विशिष्ट पहचान के साथ होता है। उसे उसी रूप में देखना चाहिए और उसके योगदान या विकास के मानक भी उसी रूप में निर्धारित किया जाना चाहिए। मिसाल के तौर पर डॉ राममनोहर लोहिया, चौधरी चरण सिंह से लेकर नेताजी मुलायम सिंह यादव तक ने पढ़ाई, कमाई, दवाई, सिंचाई के लिए जितने बुनियादी काम उत्तर भारत में किए, इन्हें क्षेत्रीय प्रारूपों के बिना कर पाना बेहद जटिल होता। ग्राम सभा, पंचायत में भागीदारी से लेकर ज़मीन पर उत्पादन

फाइल फोटो

फाइल फोटो

संबंधों की टकराहट से उपजे हालात से लड़ते हुए एक समावेशी विकास के मानकों में क्षेत्रीय दलों ने आंदोलनकारी भूमिकाएं निभाई हैं। केवल वोट बैंक की रूढ़ शब्दावलियों में डोलते जनाधार से क्षेत्रीय दलों को देखना अनुचित है।

वस्तुतः क्षेत्रीय दल लोकतंत्र के खेत को भीतर से उर्वर व उपजाऊ बनाते हैं। भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक समावेशी बदलाव में योगदान की बात करें तो भारत के स्तरीकृत विभाजित सामाजिक तानाबाना को कमजोर कर एक समानता और बंधुत्व आधारित समाज निर्माण में क्षेत्रीय दलों, खासकर उत्तर भारत में राजद, सपा तथा दक्षिण भारत में डीएमके ने मुख्यता से भूमिका अदा की है।

मौजूदा दौर में राष्ट्रीय दल बनाम क्षेत्रीय दल की सियासत करवट लेती हुई मालूम पड़ती है। राष्ट्रीय दल, क्षेत्रीय दलों को अपने परंपरागत वोट बैंक के सेंधमार की भूमिका में देखते हुए उन्हें लगातार कमज़ोर करने की प्रकरांतर से कोशिश करते हुए नज़र आते हैं। हाल ही में चुनाव आयोग द्वारा जारी क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दलों की सूची में संशोधन इस बात की पुष्टि कर रहा है। उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल (आरएलडी) की क्षेत्रीय दल की मान्यता रद्द करना संदेहास्पद है क्योंकि आरएलडी से कम वोट प्रतिशत वाले कई दल चुनाव आयोग की अद्यतन सूची में आज भी क्षेत्रीय दलों की मान्यता हासिल किए हुए हैं। एक देश में अनेकता का प्रतिनिधित्व व संरक्षण ही भारतीय लोकतंत्र को बुनियाद है। एक दल, एक रंग, एक भाषा, एक नेता, एक विचार की पैरोकारी करने वाली मानसिकता भारतीयता की संकल्पना के खिलाफ़ है। इसलिए भारतीय राजनीति को अधिक समावेशी, समदर्शी व अर्थवान बनाना तभी सार्थक होगा जब क्षेत्रीय दल और अधिक ताक़त से भारतीय लोकतंत्र में हिस्सेदारी पुख़्ता करते चलेंगे।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं)

यूपी में बंदूकराज

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था बद से बदतर हो गई है। अपराधों की पराकाष्ठा की वजह से आम आदमी भयभीत व दहशत में हैं। सामूहिक हत्याएं, लूटपाट व महिला हिंसा की वारदातों ने उत्तर प्रदेश की अवाम में भय व दहशत का माहौल बना दिया है। ऐसा लग रहा मानो उत्तर प्रदेश में जंगलराज और बंदूकराज है।

बांदा में चार लोगों की हत्या, आजमगढ़ व गोरखपुर में ट्रिपल मर्डर, प्रयागराज में पुलिस हिरासत में हत्याएं, प्रयागराज में ही कई और हत्याएं पूरे यूपी के लिए खौफ पैदा कर रही हैं। जगह-जगह गोलियों की तड़तड़ाहट है।

ये तमाम घटनाएं बताने के लिए काफी हैं कि उत्तर प्रदेश में जंगलराज है। अवाम परेशान है। सड़कों पर खुलेआम हत्याएं और लूटपाट की घटनाएं बता रही हैं कि अपराधी बेखौफ होकर घूम रहे हैं। इससे यह भी स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि अपराधियों को सत्ताधारी पार्टी का संरक्षण मिला हुआ है।

राजधानी लखनऊ में ही लोगबाग महफूज नहीं हैं। पिस्तौल की नोंक पर महिला से छिनैती, व्यापारी से दिनदहाड़े 13 लाख रुपये की लूट, महिलाओं से छिनैती की वारदातें, मंदिर से बुजुर्ग से सोने की माला लूट ली जाती है।

उत्तर प्रदेश के कमोबेश हर जिले में अराजकता फैली हुई है। प्रतापगढ़ के अंतू थाना क्षेत्र में तमंचा दिखाकर किशोरी से रेप, चंदौसी से परीक्षा देकर लौट रही बीएससी की छात्रा से बस में छेड़छाड़ की। मेरठ के कंकरखेड़ा में दो बहनों को घसीट कर पीटा गया, अश्लील हरकत की गई। उन्नाव में तो हदें ही पार हो गईं। सत्तासीन भाजपा से जुड़े पांच दबंगों ने नाबालिग से दुष्कर्म का मुकदमा वापस न लेने पर जेल से छूटते ही पीड़िता के घर में आग लगा दी। आगरा में ताजगंज स्थित त्रिवेणी इन्क्लेव में सरेशाम दरोगा की बहू को बंधक बनाकर लूट लिया गया।

यूपी में किसान बर्बाद सरकार बेफिक्र

बुलेटिन ब्यूरो

मार्च के मौसम में बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि ने उत्तर प्रदेश के किसानों को बर्बादी के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। फसलें बर्बाद होने से हाल के दिनों में किसानों की मौत की दुखद घटनाओं ने उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार पर सवाल खड़े कर दिए। लाखों किसानों का भविष्य चौपट हो गया है और वे हैरान-परेशान हैं मगर सरकार की तरफ से राहत का कोई ऐलान नहीं हुआ है। 'फसल बीमा योजना' के नाम पर बीमा कंपनियां किसानों को उलझा रही हैं और क्लेम देने में आनाकानी की जा रही है। किसानों की बर्बादी पर सरकार आंखें मूंदे हुए है। यही वजह है कि किसान यह कह रहे हैं कि भाजपा सरकार के किसी भी वायदे पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।

किसानों को उम्मीद नहीं थी कि मार्च के महीने में बारिश व ओलावृष्टि का सामना करना पड़ेगा। बे-मौसम बारिश और ओलावृष्टि से फसलों को भारी नुकसान होने

की वजह से किसान संकट में आ गया है। बुन्देलखंड से लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश तक गेहूं, सरसों, आलू, चना समेत अन्य फसलें बर्बाद हो गईं। सर्वाधिक नुकसान हमीरपुर, महोबा, ललितपुर, बदायूं, पीलीभीत, आगरा, अलीगढ़, वाराणसी, गाजीपुर, प्रयागराज, प्रतापगढ़, बाराबंकी, लखनऊ आदि जिलों में हुआ है। लखनऊ के ग्रामीण इलाकों में तेज बारिश और ओले पड़ने से गेहूं तथा आम की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है। प्रदेश के दूसरे कई जिलों में छोटे किसानों की तो पूरी खेती तबाह हो गई और उनके सामने परिवार के पालन-पोषण का संकट पैदा हो गया है। मार्च के महीने में बर्बादी के बाद तीन किसानों ने आत्महत्या कर ली जबकि दो किसानों की हार्टअटैक से जान चली गई।

फसलें बर्बाद होने के बाद भाजपा सरकार ने मुआवजा को आंकड़ों में उलझा दिया और केवल दो से तीन हजार रुपए मुआवजा देकर इतिश्री कर ली। सरकार ने 33 प्रतिशत फसलों का नुकसान होने पर ही मुआवजा देकर इसे कागजी आंकड़ों में ऐसा उलझाया कि प्रशासनिक मशीनरी इसी आंकड़े को पाने में लगी रही और उसे किसानों की बर्बादी का कोई ख्याल नहीं रहा।

किसान अब यह समझ चुके हैं कि आय दोगुनी करने का भाजपा का वायदा कोरा जुमला था और इस सरकार के रहते उसका भला नहीं होने वाला। जब किसान भाजपा की पिछली सरकारों के कामकाज को देखते हैं तो उनकी इस सोच को बल मिल रहा है कि भाजपा की सरकारें हमेशा से ही किसानों को लेकर संवेदनहीन रही हैं। बड़े व्यापारियों व पूंजीपतियों के लिए भाजपा सरकार के पास धन भी है और नियमों का भी उसे ख्याल नहीं होता। जाहिर है, किसान अपनी तकदीर बदलने के लिए 2024 में भाजपा सरकार को बदलने का इरादा कर चुका है।

...शासन को नहीं दिख रहा नुकसान

...तिशत ही खराब हुई फसल, किसान 40 से 50 फीसदी का कर रहे दावा

घर बैठे नुकसान का आकलन कर रहीं टीमें

सर्वे करने ही नहीं आया कोई, मुआवजा क्या मिलेगा

...और कब कर गया... किसानों को पता ही नहीं

सर्वे रिपोर्ट : फसलों को महज पांच फीसदी नुकसान हुआ, किसान बोले- 50 फीसदी से ज्यादा फसल बर्बाद हो गई

जिला प्रशासन के सर्वे ने किसानों की बढ़ाई पीड़ा

...कम हुआ नुकसान, किसी को नहीं मिलेगा मुआवजा

बर्बाद हो गई फसल कैसे चुकाएंगे कर्ज

अफसर हमारे बारे में नहीं सोचते

ट्रेंडिंग ब्रेकिंग न्यूज़ #मौसम अपडेट #हार्दिक पंड्या #दिल्ली मेयर चुनाव

Hindi News / state / uttar pradesh / Allahabad / Heavy Loss Of Up Farmers Due To Unseasonal Rains An

बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से UP के किसानों को भारी नुकसान, महंगाई के दौर में पड़ी डबल मार

Hindi News / कृषि समाचार / एग्री न्यूज़

ओले-बारिश से गेहूं-सरसों की फसल बर्बाद, खेतों में भारी नुकसान से टूटी किसानों की कमर!

Crops Destroyed Due to Rain: बारिश और ओलावृष्टि का सबसे ज्यादा असर खेतों में किसानों की फसलों पर दिखाई दिया है. ज्यादातर जगहों पर गेहूं की फसल गिर गई है, जिससे उत्पादन प्रभावित होगा. वहीं, सरसों की फसल को नुकसान हुआ है. बारिश से सब्जी उत्पादक किसानों को भी नुकसान पहुंचा है. तेज हवाओं के चलने से आम और लीची के बौर भी झड़े हैं.

खुली हवा से...

सारस, आरिफ और अखिलेश जी का पर्यावरण प्रेम

बुलेटिन ब्यूरो

अमेठी के आरिफ और सारस की दोस्ती की कहानी सामने आने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के प्रकृति एवं पर्यावरण प्रेम की चर्चा चारों ओर हो रही है।

लेकिन सारस के प्रति संवेदनशीलता दिखाने वाले श्री अखिलेश यादव का पर्यावरण प्रेम नया नहीं है बल्कि बचपन से ही वह पर्यावरण संरक्षण के हिमायती थे।

व्यवहार में सहज सरल एवं मानवीय मूल्यों से सराबोर श्री अखिलेश यादव ने कभी दिखावा नहीं किया। लिहाजा अपने पर्यावरण प्रेम का उन्होंने बेजा प्रचार प्रसार कभी नहीं किया। उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री रहते हुए हरियाली बढ़ाने एवं वन्यजीवों के संरक्षण का उन्होंने विशेष ध्यान रखा था।

श्री अखिलेश यादव आरिफ के मित्र सारस को लेकर ही चिंतित नहीं हैं बल्कि सारस उनकी प्राथमिकता में पहले से ही शुमार रहा है। सारस संरक्षण के लिए उन्होंने अपनी सरकार में सारस मित्र योजना चलाकर सारस की तादाद बढ़ाने में अहम भूमिका अदा की थी।

29 मार्च को सारस मित्र आरिफ से अखिलेश जी की मुलाक़ात के बाद जब यूपी सरकार के निर्देश पर वन विभाग ने सारस को आरिफ से अलग करते हुए उसे कानपुर चिड़ियाघर भेज दिया तो अखिलेश जी ने न सिर्फ सरकार के पर्यावरण विरोधी रवैए के खिलाफ मोर्चा खोला बल्कि 10 अप्रैल को कानपुर चिड़ियाघर पहुंचकर सारस का हाल-चाल भी जाना। सरकार की असंवेदनशीलता को इससे ही समझा जा सकता है की खुली हवा से सारस को पिंजरे में बंद कर दिया जिसे अखिलेश जी को सीसीटीवी कैमरे में देखना पड़ा।

यह अखिलेश जी का पर्यावरण प्रेम ही है कि उन्होंने लखनऊ में जनेश्वर मिश्र पार्क जैसा विशाल एवं हरियाली से भरपूर पर्यावरण को समर्पित पार्क बनवाया है। इस पार्क में

उन्होंने देश विदेश के तमाम प्रजातियों के दुर्लभ पेड़ पौधे लगवाए।

सरकार में रहते सारस संरक्षण के लिए उनकी सारस मित्र योजना का ही नतीजा है कि उत्तर प्रदेश में सारसों की संख्या में आज की तारीख में 4 हजार से ज्यादा का इजाफा हुआ है। वर्ष 2012 से उत्तर प्रदेश में राज्य पक्षी सारस पक्षी की साल में दो बार गणना शुरू हुई ।2012 में उत्तर प्रदेश में सारस की कुल संख्या 11275 थी, 2017 में उत्तर प्रदेश में सारस की संख्या 15110 और 2018 तक 15938 हो गई। 2021 की गणना में प्रदेश में 17,665 सारस मिले। पर्यावरण प्रेमी मानते हैं कि सारसो की तादाद में यह इजाफा श्री अखिलेश यादव सरकार की ही देन है।

...पिंजरे में कैद

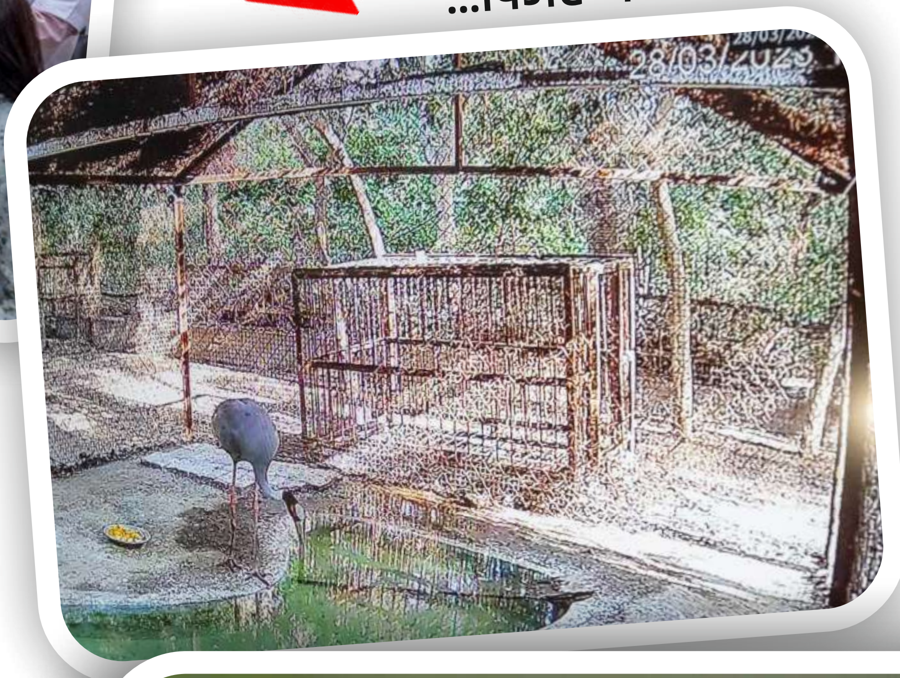

मधु लिमये जी का जन्मशताब्दी समारोह

“समाजवादी आंदोलन के पास अखिलेश जैसा सशक्त नेतृत्व”

बुलेटिन ब्यूरो

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं समाजवादी विचारक मधु लिमये का जन्म शताब्दी समारोह 25 मार्च को लखनऊ के गांधी भवन में मनाते हुए सांप्रदायिकता के खिलाफ उनकी लड़ाई और समाजवादी आंदोलन के संघर्ष को याद किया गया। समाजवादियों ने खासतौर पर रेखांकित किया कि मधु लिमये कार्यकर्ताओं के खिलाफ होने वाली किसी भी जुल्म ज्यादती के विरुद्ध किस तरह चट्टान की तरह खड़े रहा करते थे।

मधु लिमये जन्मशताब्दी समारोह में देशभर के समाजवादियों का जुटान हुआ और समाजवादी आंदोलन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। सबका एक ही मत था कि समाजवादी आंदोलन से ही परिवर्तन लाया जा सकता है। देश में खुशहाली का रास्ता समाजवादी आंदोलन से ही निकलता है।

जन्मशताब्दी समारोह का उद्घाटन दिल्ली के पूर्व विधायक व दिल्ली विश्वविद्यालय के

प्रोफेसर रहे श्री राजकुमार जैन ने किया। समारोह में लोकतंत्र, संविधान और अभिव्यक्ति की आजादी पर हो रहे हमलों पर गहरी चिंता जताई गई।

उद्घाटन करते हुए मीसा बंदी व पूर्व विधायक प्रो राजकुमार जैन ने कहा कि मधु लिमये जी ने साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई लड़ते हुए समाजवादी आंदोलन के लिए लंबा संघर्ष किया और आंदोलन को आगे बढ़ाया। उनकी खासियत यह भी थी कि वह कार्यकर्ताओं के खिलाफ होने वाली जुल्म ज्यादती के खिलाफ चट्टान की तरह खड़े रहते थे। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाकर हमें मधु लिमये जी का ऋण चुकाना है।

समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष व समाजवादी पार्टी के पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह ने अपनी कविताओं के माध्यम से देश के वर्तमान हालात पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता तीनों एक दूसरे के पूरक हैं पर दुर्भाग्यपूर्ण है कि वर्तमान सत्ता तीनों पर हमला कर रही है इसलिए समाजवादियों को लोकतंत्र को कमजोर करने वाली ताकतों को वैचारिकी से जवाब देना होगा।

विशिष्ट अतिथि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि समाजवादी आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई है। चुनाव उसमें एक पड़ाव है। देश में समाजवादी विचारधारा के पास श्री अखिलेश यादव से बड़ा कोई दूसरा नेता नहीं है। श्री अखिलेश यादव के रूप में समाजवादी आंदोलन के पास सशक्त ऊर्जावान और दूरदर्शी नेतृत्व है। श्री राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि डॉ राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव और मधु लिमये तथा नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने जिस समाजवादी आन्दोलन और विचारधारा को आगे बढ़ाया, उसका नेतृत्व आज श्री अखिलेश यादव कर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार अरूण त्रिपाठी ने कहा कि श्री मधु लिमये जी ने संविधान की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया। आज देश में लोकतंत्र, समाजवाद, संविधान और धर्मनिरपेक्षता सभी पर खतरा मंडरा रहा है। भाकपा के राष्ट्रीय सचिव अतुल अंजान ने कहा कि लोकतंत्र को बचाने की मुहिम को मजबूती देनी होगी।

समारोह के अध्यक्ष डॉ रमेश दीक्षित ने कहा कि वर्तमान सत्ता बहस नहीं चाहती है। आज के कार्यक्रम से वैचारिक बहस को बढ़ाने का माहौल बनाए रखना है। इन बहसों को आगे ले जाने से ही लोकतंत्र बचेगा।

शताब्दी समारोह समिति के आयोजन में सर्वश्री विजय नारायण, राम किशोर, महिमा सिंह, आबिद किदवई ने विशेष योगदान दिया। । समाजवादी पार्टी के नेता पूर्व विधायक जयशंकर पाण्डेय, शाहनवाज कादरी, जूही सिंह, मधुकर त्रिवेदी, कुलदीप सक्सेना, सुरेन्द्र विक्रम सिंह, आनन्द वर्धन, राम सिंह आदि ने भी समारोह को संबोधित किया।

अखिलेश के दौरे से मध्य प्रदेश में सपा की सक्रियता बढ़ी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के मध्यप्रदेश दौरे से खासा असर पड़ रहा है। दौरे से पहले और बाद में मध्यप्रदेश में समाजवादी गतिविधियों ने जोर पकड़ लिया है। समाजवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के सामाजिक न्याय के आंदोलन ने मध्यप्रदेश में भी तेजी आ गई है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने पहले ही मध्यप्रदेश इकाई का गठन कर दिया था। गठन के बाद से ही मध्य प्रदेश में भी समाजवादी आंदोलन ने रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी है। पहले जनता के मुद्दों के लेकर विधानसभा का घेराव और अब जातीय जनगणना की मांग को लेकर जागरुकता यात्रा निकल पड़ी है। 14 अप्रैल को मध्य प्रदेश के महू में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की जन्मस्थली पर पहुंचने के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के कार्यक्रम ने समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं में जोश भर दिया है। इंदौर से लेकर महू तक राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत और उमड़ी भीड़ यह बता रही है कि समाजवादी पार्टी की गतिविधियां मध्य

प्रदेश में तेज हो गई हैं।

इससे पहले मध्य प्रदेश के बालाघाट के समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष महेश सिहोर के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं ने जातीय जनगणना कराने की मांग को लेकर जनजागरण यात्रा निकाली। 23 मार्च को निकली यात्रा के दौरान समाजवादी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने नुक्कड़ सभाएं की तथा वाल पेंटिंग के जरिए जातीय जनगणना की मांग के नारों को बुलन्द किया।

जनजागरण यात्राओं में मध्य प्रदेश में समाजवादी पार्टी के प्रमुख प्रदेश महासचिव डॉ मनोज यादव, समाजवादी नेता राजकुमार नागेश्वर, महेश बोगचे, भारतीय बौद्ध महासभा के पूर्व सचिव धर्मेन्द्र कुरील, संजय बाममरे, तपेश बोरकर, मुनेश्वर लिल्लारे, अशोक पंचभाई, छोटू बाघाड़े, छोटू सहारे, राजेश कारसर्पे शामिल रहे।

मध्य प्रदेश में समाजवादी पार्टी की बढ़ती गतिविधियों ने वहां के प्रदेश स्तरीय नेताओं का भी ध्यान खींचा है। मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री ई अखंड प्रताप सिंह यादव ने 27 मार्च को लखनऊ पहुंचकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से मुलाकात की और मध्य प्रदेश की वर्तमान राजनीतिक स्थितियों पर चर्चा की। मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ के निवासी अखण्ड प्रताप सिंह यादव दो बार कांग्रेस, एक बार भाजपा और एक बार निर्दलीय विधायक रह चुके हैं। वह कांग्रेस व भाजपा सरकारों में मंत्री भी थे।

ईद की खुशियों में शामिल हुए अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने ईद के अवसर पर नेताजी-मुलायम सिंह यादव की परंपरा पर चलते हुए राजधानी लखनऊ के ऐशबाग ईदगाह व टीले वाली मस्जिद पर पहुंचकर नमाजियों का अभिवादन किया। नमाजियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से श्री अखिलेश यादव का गर्मजोशी से स्वागत किया। बाद में श्री अखिलेश यादव ईद मिलने एक दर्जन से अधिक नेताओं व कार्यकर्ताओं के घर पहुंचे और उन्हें ईद की हार्दिक बधाई दी।

ईदगाह में इमाम मौलाना खालिद रशीद फरंगी महल तथा टीले वाली मस्जिद के इमाम मौलाना सैय्यद फजलू मन्नान रहमानी ने श्री अखिलेश यादव का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी, विधायक रविदास मेहरोत्रा, मेयर प्रत्याशी श्रीमती वंदना मिश्रा, प्रो रमेश दीक्षित, महानगर अध्यक्ष सुशील दीक्षित, पूजा शुक्ला, फाकिर सिद्दीकी, यामीन खां, रामसागर यादव एवं विजय सिंह भी मौजूद रहे।

सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे महात्मा ज्योतिबा फुले

बुलेटिन ब्यूरो

महान समाज सुधारक व विचारक महात्मा ज्योतिबा राव फुले की जयंती पर समाजवादी पार्टी ने पूरे उत्तर प्रदेश में कार्यक्रम कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

11 अप्रैल को जयंती के अवसर पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा राव फुले सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। उन्होंने गरीबों, पिछड़े, दलितों और महिलाओं में जागरुकता लाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

श्री यादव ने कहा कि महात्मा फुले का पूरा जीवन, उनके कार्य-विचार आज लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। श्री यादव ने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए महात्मा फुले के विशेष कार्य को रेखांकित किया।

गरीबों-मजलूमों की आवाज थे बेनी बाबू

समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य व पूर्व केंद्रीय मंत्री बेनी प्रसाद वर्मा की पुण्यतिथि 27 मार्च पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने दिवंगत बेनी प्रसाद वर्मा के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया। इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने दिवंगत बेनी प्रसाद वर्मा को याद करते हुए कहा कि बेनी बाबू समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। उन्होंने हर सम-विषम परिस्थिति में पार्टी का साथ निभाया। किसी भी तरह की राजनीतिक स्थितियां बनीं या हालात कैसे भी रहे, वह गरीबों-मजलूमों की आवाज बुलंद करने में कभी भी पीछे नहीं हटे।

मौलाना राबे हसन नदवी को श्रद्धांजलि

महान मुस्लिम धर्मगुरू, आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष व नदवा विश्वविद्यालय के चांसलर मौलाना राबे हसन नदवी के इंतकाल पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्री यादव ने ईश्वर से दुआ की है कि वह मरहूम को जन्नत में आला मुकाम अता फरमाए।

13 अप्रैल को लंबी बीमारी के बाद मौलाना राबे हसन नदवी के इंतकाल की खबर सुनकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव दुखी हो गए। उन्होंने गहरा दुख जताते हुए ईश्वर से दिवंगत की आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना की व शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट करते हुए उन्हें सब्र अता करने की दुआ की।

याद किए गए मुख्तार अनीस

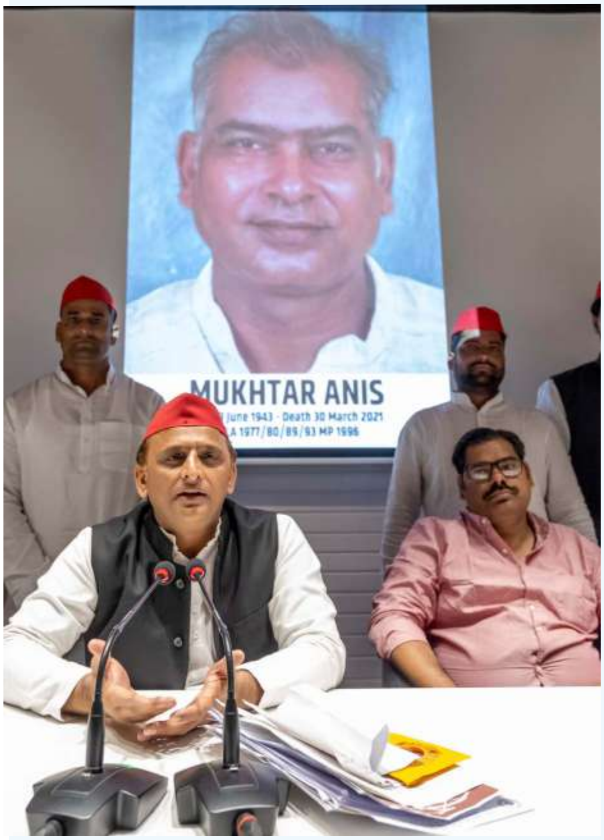

समाजवादी पार्टी के पूर्व सांसद व पूर्व मंत्री मुख्तार अनीस की पुण्यतिथि पर 31 मार्च को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर दिवंगत मुख्तार अनीस के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि श्री मुख्तार अनीस गरीबों, किसानों की समस्याओं को लेकर हमेशा संघर्ष करते रहे इसीलिए उन्हें गांजर का गांधी कहा जाता था। वह समाजवादी आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। डॉ राममनोहर लोहिया की विचारधारा और समाजवादी पार्टी के प्रति सदैव निष्ठावान रहे श्री अनीस समाजवादी पार्टी के स्थापनाकाल से जुड़े रहे और उनका परिवार आज भी समाजवादी पार्टी से जुड़ा हुआ है। उनके पुत्र श्री जहीर अब्बास भी श्रद्धांजलि समारोह में मौजूद रहे और उन्होंने भी श्रद्धासुमन अर्पित किया।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

रामराज्य की महान अवधारणा का मूल ही समाजवाद है। समाजवाद बिना भेदभाव सबको बराबर मानने व प्रेम से गले लगाने, सबको बराबर मौके व सामाजिक सुरक्षा का अभयत्व देने जैसे सिद्धांतों को सही मायनों में ज़मीन पर उतारता है।

रामराज्य, जातीय जनगणना से ही सभंव होगा, जो सच्चा सामाजिक न्याय करेगी।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ये एक तस्वीर है यादों की, समाजवादी इरादों की!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

समस्त देशवासियों को भगवान परशुराम जयंती एवं अक्षय तृतीया की हार्दिक शुभकामनाएं।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ना भेदभाव, ना जातिवाद
सबसे ऊंचा है समाजवाद।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

विपक्षी पार्टियों की छवि घूमिल करने के लिए सत्ताधारियों द्वारा पोषित वेवसाइटों, फ़ेसबुक पेजों व अन्य सोशल मीडिया को पैसे देकर प्रचार करना, लोकतांत्रिक षड्यंत्र है। इसकी गहन जाँच हो और षड्यंत्रकारियों के ख़िलाफ़ आपराधिक मामला दर्ज हो।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

गोमती का हो रहा दिखावटी उद्धार
ये है भाजपा की 'जुमली-सरकार'

#जुमली_सरकार

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

गले मिलने की सीख मुबारक... ईद मुबारक!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 06 Apr

उप्र भाजपा सरकार में अधिकांश गेहूं प्राइवेट कम्पनियाँ ही शोषणकारी मूल्य पर ख़रीद रही हैं। सरकार न तो पूरी ख़रीद कर रही है न ही बारिश-ओले या आग से बर्बाद हुई फसल के मुआवज़े व बीमे का इंतज़ाम कर रही है।

भाजपा बड़े पूँजीपतियों की पोषक है तथा किसानों की शोषक।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

'राम की शक्तिपूजा' जैसी कालजयी रचना के लेखक सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी की एक रचना को NCERT के पाठ्यक्रम से हटाया जाना अत्यंत आपत्तिजनक है।

भाजपा सरकार स्पष्टीकरण दे और तुरंत उप्र के अन्य कवियों की भी हटायी गयी रचनाओं को फिर से शामिल करवाए।

Following

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

उप्र में अपराध की पराकाष्ठा हो गयी है और अपराधियों के हौसले बुलंद है। जब पुलिस के सुरक्षा घेरे के बीच सरेआम गोलीबारी करके किसीकी हत्या की जा सकती है तो आम जनता की सुरक्षा का क्या। इससे जनता के बीच भय का वातावरण बन रहा है, ऐसा लगता है कुछ लोग जानबूझकर ऐसा वातावरण बना रहे हैं।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भये प्रकट कृपालु दशरथ नंदन
शुभ अभिनंदन-शुभ अभिनंदन!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

@ Annie Besant School

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

उप्र में जमानत पर बाहर आए आरोपियों द्वारा उन्नाव में गैंगरेप पीड़िता के 7 महीने के बच्चे को जिंदा जलाने की जघन्य घटना पर भाजपा सरकार कुछ करेगी या परिवारवालों के दुख-दर्द को समझनेवाला इस बेरहम सरकार में कोई नहीं है।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

झूठे एनकाउंटर करके भाजपा सरकार सच्चे मुद्दों से ध्यान भटकाना चाह रही है। भाजपाई न्यायालय में विश्वास ही नहीं करते हैं। आजके व हालिया एनकाउंटरों की भी गहन जाँच-पड़ताल हो व दोषियों को छोड़ा न जाए। सही-गलत के फ़ैसलों का अधिकार सत्ता का नहीं होता है।

भाजपा भाईचारे के ख़िलाफ़ है।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

पुराना कॉलेज, कैंटीन का डोसा, स्टील के गिलास में कॉफ़ी और पुराने दोस्त... आज यादें ताज़ा हो गयीं।

#Karnataka #SJCE

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भाजपा सरकार ~ अपराध-ही-अपराध

Translate Tweet

परीक्षा देकर लौट रही छात्रा की दिनदहाड़े हत्या: जालौन में बाइक से आए थे दो युवक; बीच चौराहे पर सिर पर सटाकर गोली मारी

जालौन 2 घंटे पहले

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

शीश महल लखनऊ के नवाब जाफर मीर अब्दुल्लाह साहब का इंतकाल एक युग का अंत है।

भावभीनी श्रद्धांजलि व शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना।

Translate Tweet

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 52 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

समाजवादी पार्टी
/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in

शासन की बंदूक

खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक

उस हिटलरी गुमान पर सभी रहें हैं थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक

बढ़ी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक
धन्य-धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक

सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहाँ-तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक

जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

- नागार्जुन

(साभारः कविता कोश)